केरल का क्रांतिकारी

विष्णु प्रभाकर

केरल का क्रांतिकारी

(नाटक)

किताब घर
किताब घर
नयी दिल्ली-110002

केरल का क्रांतिकारी

विष्णु प्रभाकर

© विष्णु प्रभाकर

प्रकाशक :
किताबघर
24/4886, अंसारी रोड,
दरियागंज, नयी दिल्ली-110002

मूल्य : पन्द्रह रुपये

छात्र संस्करण : 1996

मुद्रक :
बालाजी ऑफसेट,
नवीन शाहदरा,
दिल्ली-110032

KERAL KA KRANTIKARI (HINDI)
by Vishnu Prabhakar Price : Rs. 15.00

प्रिय बन्धु

श्री एम० के० बेलायुधन नायर

तथा

प्रोफेसर एम० जी० राजगोपालन

को

बहुत बहुत प्यार के साथ

भूमिका

यह नाटक लिखने की प्रेरणा मुझे कैसे मिली इसका एक इतिहास है। सन् 1950 में भारतीय स्वाधीनता संग्राम को रेखांकित करते हुए मैंने, छः रूपक आकाशवाणी के लिए लिखे थे। अवधि निश्चित थी सन् 1857 के पहले स्वाधीनता संग्राम से लेकर 1947 में भारत के स्वाधीन होने तक।

इन रूपकों के लिए सामग्री एकत्रित करने की प्रक्रिया में मैंने पाया कि सन् 1857 के पूर्व भी देश के विभिन्न अंचलों में विदेशी सत्ता के विरुद्ध अनेक विद्रोह हुए हैं। अनेक व्यस्तताओं के कारण तब मैं इस ओर विशेष ध्यान नहीं दे सका, पर यह बात मेरे मस्तिष्क में निरन्तर घुमड़ती रही। इस सम्बन्ध में जो भी सूचना मुझे मिली या जो भी नयी कहानी मैं पढ़ता उसे सहेज कर रख लेता था। तब मैंने यह अनुभव किया कि अपने ही देश के बारे में हमारा ज्ञान कितना अधूरा है। दक्षिण तथा पूर्वोत्तर प्रदेश में नाना कारणों से कितने और कैसे-कैसे विद्रोह विदेशी सत्ता के विरुद्ध हुए, इन सबके बारे में जानना तो दूर, सुना तक नहीं हमने

बेशक तब स्वाधीनता का व्यापक रूप उनके सामने नहीं था। अपनी-अपनी सीमित स्वायत्तता के लिए लड़े थे वे लोग। पर साथ ही यह भी सच है कि वे संघर्ष ही आगे चलकर दशव्यापी चेतना की रीढ़ बने। यह भी सच है कि इन संघर्षों के पीछे जो शक्तियां काम कर रही थीं या जो नेता इनका संचालन कर रहे थे उनमें से अधिकांश, 'स्वाधीनता' का अर्थ जानते थे। शायद कुछ लोगों को यह जानकर भी सुखद आश्चर्य होगा कि इन संघर्षों में नारियों की भूमिका किसी भी दृष्टि से नगण्य नहीं थी।

यहां तक कि जनजातियां भी पीछे नहीं थीं। उत्तर भारत के हम लोग झांसी की रानी लक्ष्मीबाई को लेकर गर्व से फूले नहीं समाते, पर कित्तूर की रानी चेनम्मा की शौर्य-गाथा किसी भी दृष्टि से कम गौरवशाली नहीं है। श्रीमती आशारानी व्होरा ने न जाने कहां-कहां से ढूंढ़कर ऐसे कई चरित्रों को उजागर किया है। इसी तरह हम कर्नाटक के टीपू सुल्तान की तत्कालीन गोरी सरकार से लोहा लेने की रोमांचक शौर्य-गाथा की चर्चा करते नहीं थकते; पर कितने लोग जानते हैं कि उसके पड़ोस केरल में ही एक ऐसा व्यक्ति मौजूद था, जिसने पिछली सदी के आरम्भ में (सन् 1808-9) बढ़ते हुए ब्रिटिश साम्राज्यवाद से लोहा लिया था। उस व्यक्ति का ही नाम था वेलुत्तम्पी दलवा। वही इस नाटक के नायक हैं।

उस समय तिरुवितांकुर राज्य की राजधानी पद्मनाभपुरम् थी। बाद में तिरुअनंतपुरम् को राजधानी बनाया गया। इसके बाद भी अधिकतर सेना पद्मनाभपुरम् में ही रहती थी। पास में ही पश्चिम की ओर एक छोटा-सा गांव था तलक्कुलम्। यहां के 'प्रभुओं' के पास बड़े-बड़े भवन थे। ये लोग युद्धों में राज्य की सहायता करते थे। इसी कारण इन्हें 'त्तम्पी' का विरुद मिला था। ऐसे ही एक भवन में 6 मई, 1765 के दिन वेलुत्तम्पी का जन्म हुआ था, पूरा नाम था वेलायुधन।

इनके माता-पिता का इनके बचपन में ही देहान्त हो गया था। लेकिन बालक वेलु बहुत ही कुशाग्र बुद्धि था। अपने विद्यार्थी जीवन में वह बहुत शीघ्र संस्कृत, तमिल और मलयालम भाषाओं में पारंगत हो गया था। गणित में भी उसकी वैसी ही गति थी।

उसने शरीर भी अत्यन्त सुडौल और स्वस्थ पाया था। दीर्घ काया, पुष्ट कन्धे, आजानु बाहु और उभरा हुआ वक्ष। व्यक्तित्व जितना प्रभावशाली था उतना ही आश्वस्त करने वाला भी था। उन दिनों चोरी और डकेतियां बहुत होती थीं, लेकिन युवक त्तम्पी के सामने आते ही डाकू कांपने लगते थे इसलिए वे शीघ्र ही ताल्लुकेदार के सहायक और फिर च-प्रधान बन गए।

इन्हीं दिनों अचानक महाराज धर्मराज के महल से कई हीरे चोरी

हो गए। अनेक प्रयत्न करने पर भी अधिकारी चोरों को नहीं पकड़ सके। महाराज के क्रोध का पार नहीं था। लेकिन तभी उन्होंने वेलुत्तम्पी के शौर्य के बारे में सुना। उन्होंने तत्काल उन्हें बुलाया और वेलुत्तम्पी ने तीन दिन के भीतर ही चोरों को पकड़ लिया। महाराज इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने वेलुत्तम्पी को तुरन्त ताल्लुकेदार बना दिया। वेलुत्तम्पी ने भी अपने कुशल प्रशासन और न्यायप्रियता के कारण सबका मन मोह लिया।

लेकिन राजधानी में राजनीति का दूषित चक्र उसी तरह चल रहा था। ईर्ष्या और द्वेष के कारण सारा वातावरण विषाक्त हो उठा था। इस षड्यन्त्र का नेता था एक चापलूस सेवक जयन्तन शंकरन नम्पूतिरि। वह उस समय के कुशल प्रशासक दीवान केशवदास को अपदस्थ करना चाहता था। केशवदास अत्यन्त प्रतिभाशाली थे, पर स्वभाव से उतने ही सौम्य थे। उन्होंने कई बार जयन्तन के षड्यन्त्र को व्यर्थ कर दिया, पर फिर भी जयन्तन महाराज के मन को दूषित करने में सफल हो गया। उसने उन्हें विश्वास दिलाया कि दीवान उन्हें अपदस्थ करके स्वयं महाराज बनना चाहता है।

शासकों की यही दुर्बलता होती है। महाराज ने विश्वास कर लिया और केशवदास को बन्दीगृह में डाल दिया। कहते हैं कुछ ही दिनों में जयन्तन ने उनकी हत्या करवा दी और स्वयं मुख्यमन्त्री बन गया। वह लोभी, लम्पट और स्वार्थी था। ऐसे ही थे उसके सलाहकार। इसलिए शीघ्र ही राज्य में अराजकता फैल गई। चोरी, डकैती और हत्या साधारण बात हो गयी। अंग्रेजों की कम्पनी सरकार भी राज्य की सहायता के नाम पर खूब पैसा ऐंठने लगी। खजाना खाली हो गया। जयन्तन ने अब अन्धाधुन्ध कर लगाने शुरू कर दिये। जो नहीं दे पाते थे या विरोध करते थे उन्हें कड़ा दण्ड दिया जाने लगा।

इसका परिणाम यह हुआ कि जनता में असन्तोष भड़क उठा और अन्दर ही अन्दर क्रान्ति की आग सुलगने लगी। पर किसी नेता के अभाव में उसे दिशा नहीं मिल रही थी। तभी एक घटना घटी। पैसे के लिए पागल जयन्तन की दृष्टि ताल्लुकेदार वेलुत्तम्पी पर पड़ी। उन्हें राजधानी

बुलाकर जयन्तन ने आदेश दिया, मुझे तीन दिन के भीतर तीन हजार रुपये चाहिए। जब तक रुपया नहीं मिलता, तब तक तुम ताल्लुकेदार के पद पर काम नहीं कर सकते।

वेलुत्तम्पी के क्रोध का पार नहीं था, पर वे जानते थे कि उतावली करने का अर्थ है पराजय स्वीकार करना। इसलिए वह चुपचाप लौट गये, लेकिन चुप नहीं बैठे। जन-नेताओं और पंच-प्रमुखों को बुलाकर उनसे सलाह की। और अपने परम मित्र अय्यप्पन चम्पकरामन को भी विश्वास में लिया। अन्त में वे इस निश्चय पर पहुंचे कि सहने की एक सीमा होती है, हमें विद्रोह करना होगा।

इस निश्चय की सूचना जयन्तन को तो नहीं मिली पर कम्पनी बहादुर को मिल गई। उसने महाराज को बता दिया। महाराज ने विद्रोह को तुरंत कुचल देने का आदेश दिया। लेकिन किसी ने भी चिन्ता नहीं की। उन सबकी सहानुभूति अब विद्रोहियों के साथ थी। एक अपार जन-समूह के साथ वेलत्तम्पी तिरुअनंतपुरम् पहुंचे। महाराज चकित थे और जयन्तन डरकर न जाने कहां जा छिपा था। महाराज नहीं जानते थे कि स्थिति इतनी नाजुक हो चुकी है। उन्होंने जन-प्रतिनिधियों को बातचीत के लिए बुलाया।

अन्त में जो समझौता हुआ। उसके अनुसार जयन्तन और उसके गिरोह को जनता को सौंप दिया गया। अय्यप्पन चम्पकरामन दीवान बने और वेलुत्तम्पी वाणिज्य-मन्त्री। षड्यन्त्रकारी कुछ समय के लिए चुप हो गए। पर उन्होंने फिर सिर उठाया। उन्होंने कुछ स्वामिभक्त अधिकारियों की हत्या कर दी। लेकिन कोई कुछ कर पाता इससे पूर्व ही अय्यप्पन चम्पकरामन की मृत्यु हो गई। वेलुत्तम्पी ने वाणिज्य-मन्त्री के रूप में, थोड़े ही दिनों में भ्रष्टाचार खत्म करके और लाभप्रद वस्तुओं का उत्पादन बढ़ाकर राज्य को मालामाल कर दिया था। इसलिए महाराज ने उन्हें ही अपना नया दीवान नियुक्त किया।

वेलुत्तम्पी अब दीवान अर्थात् दलवा थे। लेकिन वे जितने न्यायप्रिय थे उतने ही कठोर भी थे। उन्होंने जहां एक ओर जनता की दशा सुधारने के लिए अनेक प्रयत्न किए, वहीं भ्रष्टाचारियों को कड़े से कड़ा दण्ड भी

दिया। वे हिन्दुओं को मनुस्मृति के और मुसलमानों को कुरान के विधान के अनुसार सजा देते थे। उन्होंने कर्मचारियों के अधिकार, कर्त्तव्य और वेतन, इन सबको निश्चित कर दिया था। वाणिज्य क्षेत्रों में सुविधाएं बढ़ा दीं, नये क्षेत्र खोले, सड़कें ठीक कीं। धीरे-धीरे राज्य ऋणमुक्त होने लगा। उस समय कर्नल मैकाले कम्पनी बहादुर का एजेन्ट था। उसने गवर्नर जनरल से वेलुत्तम्पी की भूरि-भूरि प्रशंसा की। दोनों बडे अच्छे मित्र बन गए।

लेकिन षड्यन्त्र अब भी चल रहे थे। कुंचूनीलम पिल्लै नामक एक अधिकारी महाराज को यह विश्वास दिलाने में सफल हो गया कि वेलुत्तम्पी उन्हें गद्दी से उतारना चाहता है। महाराज ने दीवान को बन्दी बनाने के आदेश दे दिये। वेलुत्तम्पी ने सुना तो अवाक् रह गए। उन्होंने तुरन्त अपने मित्र कर्नल मैकाले को सूचना दी और फिर दोनों महाराज के पास पहुंचे। उन्हें सही स्थिति से अवगत कराया। महाराज ने आज्ञा-पत्र फाड़ दिया।

कुंचूनीलम पिल्लै कहीं भाग गया। उसी समय एक और दुर्घटना घटी। राज्य कम्पनी बहादुर को चार लाख प्रतिवर्ष देता था। लेकिन कोश में उतना पैसा नहीं था। विवश होकर वेलुत्तम्पी को यह निश्चय करना पड़ा कि सैनिकों का वेतन कुछ कम कर दिया जाए। यह समाचार पाते ही सेना में विद्रोह भड़क उठा। वेलुत्तम्पी ने एक बार फिर कर्नल मैकाले से सलाह ली। मैकाले तो यही चाहता था। वेलुत्तम्पी यहीं चूक गए। उन्होंने मैकाले की मदद से विद्रोह को तो दबा दिया, लेकिन गवर्नल वैलेजली ने इस अवसर का पूरा लाभ उठाया। उसने इस सहायता के बदले नयी सन्धि का प्रस्ताव किया। इस सन्धि की शर्तें बड़ी अपमानजनक थीं। राज्य को अब कम्पनी को आठ लाख रुपये प्रतिवर्ष देने थे। वह दूसरे राजाओं से पत्र-व्यवहार नहीं कर सकता था। पैसा न मिलने पर कम्पनी को राज्य पर अधिकार करने का हक था।

महाराज इस सन्धि पर हस्ताक्षर करने के लिए तैयार नहीं थे। वेलुत्तम्पी भी बहुत दुखी थे। लेकिन वह यह भी जानते थे कि वैलेजली इस समय उत्तर भारत के अनेक राज्यों पर कब्जा कर चुका है। इसलिए

उन्होंने महाराज को सन्धि पर हस्ताक्षर करने की सलाह दी। उन्हे मैकाले ने यह विश्वास भी दिलाया था कि बाद में वह आठ लाख की राशि में से दो लाख की राशि कम कर देगा, लेकिन सन्धि पर हस्ताक्षर हो जाने के बाद उसने कुछ भी करने से इन्कार कर दिया। वेलुत्तम्पी इस दुरभिसन्धि को समझ गए, लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी।

इसके बाद की कहानी ही इस नाटक की कथावस्तु है। जहां तक पात्रों का सम्बन्ध है उनमें से अधिकांश ऐतिहासिक हैं। नाटक की कथा को गति देने के लिए और नाटकीय स्थितियों का निर्माण करने के लिए मैंने कल्पना का सहारा भी लिया है, पर उसके कारण मूल कथा पर कोई आंच नहीं आई है। काल्पनिक पात्रों में एक पात्र है अम्मुकुट्टी। उसे मैंने वेलुत्तम्पी की प्रेमिका के रूप में चित्रित किया है। उन्होंने निश्चय किया था कि वे शादी नहीं करेंगे और जीवन-भर राज्य की सेवा करेंगे। अधिकांश व्यक्तियों का मत है कि उनकी कोई प्रेमिका नहीं थी, लेकिन कुछ व्यक्ति मानते हैं कि वह थी। मैंने नाटक की कथा को गति देने के लिए वेलुत्तम्पी की 'चेतना' को मानवी रूप देकर उसकी प्रेमिका के रूप में चित्रित किया है। प्रत्यक्ष में उसका कोई आधार नहीं है, लेकिन फिर भी है। इसी कारण मैं स्वतन्त्रता ले सका।

जिन गीतों का इस नाटक में मैंने उपयोग किया है, वह बहुत बाद में लिखे गये हैं, लेकिन उनके पीछे जो भावना है वह उस युग के बिलकुल अनुरूप है। इसलिए उनका उपयोग करने में मैंने संकोच नहीं किया। यदि उस समय किसी ने गीत लिखे होंगे या लिखे होते तो उनका भाव यही होता। मैं इन गीतों के रचयिता कविवर श्री सोहनलाल द्विवेदी और स्व० श्री भवानी प्रसाद मिश्र का आभारी हूं।

इस नाटक के प्रणयन में जिन मित्रों का सक्रिय सहयोग रहा उन सबको, बन्धुवर श्री वेलायुधन नायर, प्रोफेसर राजगोपाल, डा० धर्मवीर आई० ए० एस०, डा० सुधांशु चतुर्वेदी, श्रद्धेय श्री वी० आर० परमेश्वरन पिल्लै और श्रीमती कोन्नियूर उषा को किन शब्दों में धन्यवाद दूं। वास्तव में उनके प्रति आभार प्रकट करना उनके कार्य के महत्त्व को आंकना नहीं हो सकता। फिर भी मैं इस क्षण उनका प्रेमपूर्वक स्मरण

करता हूं।

केरल राज्य के पर्यटन विभाग का भी मैं कृतज्ञ हूं कि उन्होंने मेरी, इस नाटक के सम्बन्ध में होने वाली, खोज-यात्रा को सफल बनाने में मेरी बहुत सहायता की। और उन सब जाने-अनजाने मित्रों और साथियों का भी मैं कृतज्ञ हूं जो इसके प्रणयन की प्रक्रिया में साक्षी और सहायक रहे।

बस इतना ही मेरा अधिकार है। शेष पाठक जानें।

818, कुण्डेवालान,
अजमेरी गेट,
दिल्ली-110006

—विष्णु प्रभाकर
23-12-86

पात्र प्रवेश करने के क्रम से—

वेलुत्तम्पी
अच्चन
पद्मनाभन
सेनाध्यक्ष
अम्मुकुट्टी
धाय मां
मैकाले
तरकन
सेनापति
उद्घोषक
कमांडर
प्रहरी
महाराज
गोपालन
कर्नल सेंट लीगर
उम्मिणीत्तम्पी
बालन पिलै
मठाधिकारी

इनके अतिरिक्त आवश्यकतानुसार अनेक अधिकारी, पंच, युवक युवतियां, नागरिक स्त्री-पुरुष और सैनिक (फिरंगी तथा देसी) ।

केरल का क्रांतिकारी

अंक 1

[मंच का पीछे का लगभग आधा भाग उठा हुआ है। तीन पैड़ियां चढ़कर ऊपर पहुंच सकते हैं। उनके बीचोबीच सामने राजमहल की ओर जाने का द्वार है। पीछे नारियल के कुंज दिखाई देते हैं। दोनों ओर बाहर जाने का रास्ता है। नीचे भी दोनों ओर से दो मार्ग आकर पैड़ियों के पास समाप्त होते हैं। उठान और मार्गों के बीच जो स्थान है उसमें दायीं ओर राज्य और जनता सम्बन्धी घटनाएं घटती हैं, बायीं ओर रेजीडेंट और फिरंगियों सम्बन्धी। पर्दा उठने पर तिरुवितांकुर और कोच्ची के दीवान महल के द्वार से बाहर आते हैं। दायीं ओर आकर वे एक क्षण ठिठकते हैं जैसे किसी समस्या में उलझे हों। फिर सहसा बोल उठते हैं।]

वेलुत्तम्पी : (किंचित आवेश) मैं स्वयं कर्नल मैकाले के पास गया। उसने आठ लाख रुपये एक साथ और एकदम मांगे थे। कहां से आते इतने रुपये एक साथ ? फिर भी मैंने कुछ रुपये इकट्ठे किए और उसके पास गया। वह मुझे अच्छी तरह जानता है। दीवान बनने में उसने मेरी मदद की है और जब हमारी सेना में विद्रोह हो गया था तब भी

उसे दबाने में उसने हमारी सहायता की थी। इसीलिए मैंने महाराज को इस अपमानजनक सन्धि पर हस्ताक्षर करने को राजी किया था। (दीर्घ निःश्वास) और हम कर भी क्या सकते थे ? उसने मुझे विश्वास दिलाया था कि वह बाद में आठ लाख की राशि को कम कर देगा (एकदम तेज होकर) लेकिन वह तो आजकल हमारे परम शत्रु मात्तु तरकन के कहने में चल रहा है। बोला--आठ लाख देने होंगे, अभी, नहीं तो ...(अल्प विराम। सुदूर आकाश में झांकते हुए) वास्तव में ये फिरंगी हमारा राज्य हड़पना चाहते हैं, हमें गुलाम बनाना चाहते हैं।

अच्चन : बनाना क्या, वे तो अभी से हमारे साथ हाकिमों जैसा व्यवहार करने लगे है। दिमाग खराब हो गया है इन फिरंगियों का, हमारे राज्य के परम शत्रु कुञ्जुकृष्ण मेनोन को उसने शरण दे रखी है। बार-बार कहने पर भी वह उसे हमारे हवाले नहीं कर रहा। इतनी जुर्रत, इतना साहस। एक दिन व्यापार की भीख मांगने आए थे ये फिरंगी, अब शासक बनना चाहते हैं।

वेलुत्तम्पी : इसी नीति पर चल रहा है लॉर्ड वैलेजली। उत्तर भारत के अनेक राज्यों को धीरे-धीरे हड़प लिया है उसने। लोग मुझे दोष देते हैं कि नई सन्धि राज्य का अपमान है, गुलामी का पट्टा है। पर मैं उन्हें कैसे समझाऊं कि उस समय राज्य को बचाने का यही एकमात्र रास्ता था ? उस समय हम उनकी बढ़ती हुई ताकत को चुनौती देने की

स्थिति में नहीं थे।

अच्चन : लेकिन अब हैं। हम आत्मसमर्पण नहीं करेंगे। हम उनका विरोध करेंगे।

वेलुत्तम्पी : विरोध ही नहीं, उन्हें कुचल देंगे। युद्ध अनिवार्य है। जनता में असन्तोष है। बस उसे भड़काने की जरूरत है।

अच्चन : (विश्वास भरा स्वर) हम भड़काएंगे। और एक साथ मिलकर उनसे लोहा लेंगे। (हंसकर) तभी तो मैं आज यहां हूं। यदि कालीकट और साथ आ जाए···

वेलुत्तम्पी : वह भी आएगा, आना होगा उसे। मैंने सामूतिरी को पत्र भेजा है।

अच्चन : भेज दिया आपने ?

[बातें करते-करते नीचे उतर कर मंच के दायीं ओर जाते हैं। वहां दो दीवान हैं। उन पर आमने-सामने बैठ जाते हैं। वेलुत्तम्पी अच्चन की आंखों में आंखें डाल-कर कहता है।]

वेलुत्तम्पी : (मुस्कराकर) उन्हें ही नहीं, मैंने फ्रांसीसियों और मराठों को भी लिखा है। (धीमा स्वर) मारिशस भी एक दूत भेजा है और मुझे इस बात का भी पता लगा है कि फारस से कुछ अमरीकी यहां आए हैं। मैं उनसे भी बातचीत करने की कोशिश कर रहा हूं।

अच्चन : (धीरे-धीरे) मैंने सुना है कि जनवरी में एक बड़ी फ्रांसीसी सेना मलाबार के तट पर उतरने वाली है। उसका उद्देश्य फिरंगियों को यहां से खदेड़ना है।

वेलुत्तम्पी : मुझे मालूम है (गर्दन हिलाता है) हम उनसे भी बात करगे। क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि यह सब केवल संयोग नहीं है ? नियति ने जान-बूझकर यह बानक बनाया है। फिरंगियों को यहां से जाना ही होगा। (हंसता है)

अच्चन : जरूर जाना होगा।

[इसी समय महल के द्वार से दो व्यक्ति तेजी से नीचे आकर उनके पास आ जाते हैं। उनमें से एक वेलुत्तम्पी का छोटा भाई पद्मनाभन है दूसरा कोची का सेनाध्यक्ष]

पद्मनाभन : भैया, कालीकट के लिए जो पत्र भेजा है, वह पहुंच गया है। फ्रांसीसियों और मराठों के उत्तर की प्रतीक्षा की जा रही है। आपके आदेशानुसार हर जिले में आदेश भेज दिया गया है कि वहां की जनता का कम-से-कम एक चौथाई भाग सैनिक शिक्षा ले। तलवार, भाला, तीर-कमान, जिसमें जिसकी रुचि हो चलाना सीखे।

वेलुत्तम्पी : (अच्चन की ओर देखकर) देखा आपने दीवान साहब, मेरा प्रबन्ध कितना पक्का है। मैं बहादुर नायरों की प्रबल सेना खड़ी करना चाहता हूं।

अच्चन : और मैं तीय्यरों की।

सेनाध्यक्ष : जी हां, मैं अपनी उस योजना के बारे में पद्मनाभन जी को बता चुका हूं और उनकी व्यूह-रचना के बारे में जान चुका हूं। मुझे पूरा विश्वास है कि हमारी योजना सफल होगी।

वेलुत्तम्पी : क्यों नहीं होगी ? अवश्य होगी। (मुड़कर) पद्मनाभन, सामूतिरी को जो पत्र मैंने लिखा

है, उसकी नकल तुम्हारे पास है। वह दीवान साहब को पढ़कर सुनाओ तो।

पद्मनाभन : जी (**पत्र खोलता है और पढ़ता है**)···उनकी मांगें निरन्तर बढ़ती जा रही हैं। वे चाहते हैं कि राज्य के सभी निवासी हथियार डाल दें और कम्पनी के आदेशों का पालन करें। राज्य की आय का केवल पांचवां हिस्सा ही राजा अपने खर्च के लिए लें।···अगर ये मांगें नहीं मानी जातीं तो लड़ाई शुरू हो जाएगी और हम राज्य पर अधिकार कर लेंगे। क्या हम इन शर्मनाक मांगों को मान सकते हैं? नहीं, हम इन्हें नहीं मानेंगे। हम युद्ध करेंगे। यदि हम सब एक साथ मिलकर युद्ध करेंगे तो वे हमें गुलाम नहीं बना सकेंगे···

अच्चन : कभी नहीं बना सकेंगे। और मुझे विश्वास है कि सामूतिरी पुराने बैर-भाव को भूलकर संकट की इस घड़ी में हमारा साथ देंगे।

वेलुत्तम्पी : उन्हें देना चाहिए। और मैं समझता हूं वे देंगे।

अच्चन : हां, वह देंगे, क्योंकि जो संकट आज हमारे सिर पर मंडरा रहा है वह कल उन पर भी मंडरा सकता है। (**अल्प विराम**) मैं भी उन्हें ऐसा ही पत्र लिखूंगा।

[तभी महल के द्वार से होकर राज्य का एक अधिकारी वहां आता है।]

अधिकारी : रेजीडेंट महोदय का एक विशेष दूत आपके लिए एक पत्र लेकर आया है।

वेलुत्तम्पी : रेजीडेंट का विशेष दूत इस समय! (**एकदम**) लाओ, देखें। (**पत्र लेकर पढ़ने लगता है और**

त्योरी चढ़ने लगती है। अन्त में पत्र को मुट्ठी में भींचकर मसल देता है) यह नहीं होगा, यह कभी नहीं होगा।

अच्चन : (चकित) क्या नहीं होगा? क्या लिखा है रेजीडेंट ने?

वेलुत्तम्पी : (क्रुद्ध स्वर) लिखा है कि अगर मैं दीवान का पद त्याग दूं और मलाबार में जाकर बस जाऊं तो वे मुझे पांच सौ रुपये मासिक पेंशन देने की व्यवस्था कर देंगे। (तैश में आकर) मुझे लालच देना चाहता है पर वह नहीं जानता कि वेलुत्तम्पी किसी और ही मिट्टी का बना है। वह समझता है कि वह बहुत चतुर है पर उसने अभी···

अच्चन : (मुस्कराकर) आप ठीक कहते हैं! वह अपने को बहुत चतुर समझता है पर वह नहीं जानता कि वह डाल-डाल तो हम पात-पात। (धीरे से) फिर भी···

वेलुत्तम्पी : फिर भी···कहिए न क्या कहना चाहते हैं।

अच्चन : मुझे लगता है हमें इस अवसर का लाभ उठाना चाहिए।

[सब चौंकते हैं]

वेलुत्तम्पी : क्या मतलब?

पद्मनाभन : कैसा लाभ?

अच्चन : बताऊंगा। अभी मेरे साथ आइए सब लोग।

[कहते-कहते आगे बढ़ जाता है। सब लोग यंत्रवत् उसके पीछे-पीछे जाते हैं। दो क्षण वहां सन्नाटा रहता है। फिर दायीं

ओर से एक नायर युवती वहां आती है। मुण्डु, नेडियतु और मुलक्कच्चा पहने है। चेहरे पर गहरी उदासी है, लेकिन आंखों में आत्मविश्वास की झलक है। उसके लम्बे केश डोरी में बंधे पीठ पर लहरा रहे हैं। धीरे-धीरे पैड़ियों के पास आकर ठिठकती है। फिर जैसे अपने से ही बात करती हो।]

अम्मुकुट्टी : रे मेरे मन, तू इतना उदास क्यों है? जिस बात की अब कोई सम्भावना नहीं उसके लिए मन में आशा के दीप जलाये रखना क्या अच्छी बात है? फिर दलवा तो आजकल बड़ी विकट स्थिति में फ़ंसे हैं। ऐसे में कोई किसी के आलिंगन में बंधने की कल्पना कैसे कर सकता है? (**अल्प विराम**) लेकिन मैं अपने मन का क्या करूं? (**सहसा तीव्र होकर**) नहीं, नहीं, मैं ऐसा कुछ नहीं करूंगी जिससे दलवा दुर्बल बनें। मैंने उनका वरण किया है, मैंने उन्हें प्यार किया है, मैं उन्हें छोटा नहीं होने दे सकती, नहीं होनें दूंगी···

[तभी भीतर से दलवा तेजी से आते हैं। उनका चेहरा प्रसन्नता से दमक रहा है। सहसा उनकी दृष्टि अम्मुकुट्टी पर पड़ती है। चौंकते हैं। फिर मुस्कराकर उनके पास आते हैं।]

वेलुत्तम्पी : तुम आ गयीं। मैं तुम्हारी ही याद कर रहा था।

अम्मुकुट्टी : मेरी याद ? क्यों, क्या आपने अपना विचार बदल दिया है ?

वेलुत्तम्पी : (नीचे उतरते हैं। दोनों पास, और पास आते हैं) नहीं, वह बात नहीं है। मैं जो कह चुका हूं उस पर दृढ़ हूं। मैंने अपना जीवन राज्य की सेवा में समर्पित कर दिया है। मेरे पास तुम्हें देने के लिए कुछ नहीं बचा है···

अम्मुकुट्टी : वह सब मैं न जाने कितनी बार सुन चुकी हूं और आशा भी छोड़ चुकी हूं।

वेलुत्तम्पी : (हंसकर) लेकिन आशा तुम्हें नहीं छोड़ रही। (अल्प विराम) आज मेरे मन में भी एक नयी आशा का उदय हुआ है।

अम्मुकुट्टी : (उत्सुक होकर) कौन-सी आशा है वह ? जरा सुनूं तो।

वेलुत्तम्पी : (गम्भीर होकर) देश को मुक्त कराने की आशा।

अम्मुकुट्टी : ओह !!

वेलुत्तम्पी : अम्मू ! फिरंगियों ने हमारे राज्य को हड़पने का षड्यंत्र रचा है। पहले संधि को सख्त करके हमें अपमानित किया। अब मुझे पेंशन देकर यहां से हटा देना चाहते हैं। (आवेश में उभार) लेकिन वे नहीं जानते कि वेलुत्तम्पी फौलाद का बना है। वह टूट सकता है पर झुक नहीं सकता।

अम्मुकुट्टी : यह बात मुझसे अच्छी तरह और कौन जानेगा ?

वेलुत्तम्पी : (खोया-खोया) तभी तो, तभी तो···

अम्मुकुट्टी : कहिए न, रुक क्यों गये ?

वेलुत्तम्पी : मुझे तुम्हारी सहायता की जरूरत है।

अम्मुकुट्टी : क्या आपको मुझ पर विश्वास है? क्या आप समझते हैं कि मुझमें आपकी सहायता करने की योग्यता है ?

वेलुत्तम्पी : जो प्रेम करना जानता है, वही सच्चा मित्र होता है, और मैं जानता हूं तुम मुझसे प्रेम करती हो। और मेरे आदेश पर कुछ भी कर सकती हो···

अम्मुकुट्टी : तो दीजिए न आदेश। परीक्षा कर देखिए।

वेलुत्तम्पी : परीक्षा लेने-देने की परिधि से तुम बहुत ऊपर उठ चुकी हो। अम्मु ! तुम्हें तो अब चारिणी बनकर देश को जगाना है। जन-मन में जो असन्तोष उभरा है उसी अमूर्त को मूर्त रूप देकर उन्हें संघर्ष के लिए तैयार करना है। यह समझ लो कि तुम मेरी चेतना हो।

अम्मुकुट्टी : मैं नहीं जानती थी कि आप मुझे अपने इतना पास समझते हैं। विश्वास रखिए, अब आपकी यह चेतना जन-जन की चेतना बन चुकी है। आपके साथ खड़े होने का सौभाग्य पाकर मैं धन्य हो गयी।

वेलुत्तम्पी : साथ खड़ी रहो या दूर खड़ी रहो, अब तुम्हारी शक्ति ही मेरा सम्बल है।

अम्मुकुट्टी : (गद्गद) तो अब चलूं, फिर मिलेंगे।

वेलुत्तम्पी : अवश्य मिलेंगे। बार-बार मिलेंगे। अपनी चेतना से बिछुड़कर कोई कैसे जी सकता है ?

अम्मुकुट्टी : मैं धन्य हुई मेरे दलवा !

[कहते-कहते उसी मार्ग से बाहर जाने को मुड़ती है, लेकिन दूसरे क्षण पीछे देखती है। दलवा वैसे ही खड़े हैं। दोनों

के नयन मिलते हैं जैसे दोनों के मध्य प्रकाश का एक पुल बन जाता है। फिर अम्मुकुट्टी एकदम बाहर चली जाती है। वेलुत्तम्पी अभी भी वैसे ही खड़े हैं। चेहरे पर कई रंग आते-जाते हैं। फिर एकाएक गम्भीर होकर ताली बजाते हैं। दूसरे ही क्षण पद्मनाभन वहां आता है।]

वेलुत्तम्मी : पद्मनाभन, महाराज से बातें हुई थीं। मैंने उन्हें बता दिया है कि हम रेजीडेण्ट की मांगें कभी स्वीकार नहीं करेंगे। उन्होंने सब मुझ पर छोड़ दिया है।

पद्मनाभन : आपने क्या सोचा ?

वेलुत्तम्पी : युद्ध अनिवार्य है। जागृति का बिगुल बज चुका है। अम्मुकुट्टी आयी थी। उसने यह भार संभाल लिया है।

पद्मनाभन : फिर भी शक्तिशाली फिरंगियों से लड़ना हंसी-खेल नहीं है भैया !

वेलुत्तम्पी : तभी तो मैंने सेनापति को आदेश दे दिये हैं कि वे अपने सभी पुराने किलों की मरम्मत करा लें। सेना को सभी सामरिक महत्त्वों के स्थान पर तैनात कर दें। (अल्प विराम) और यह सब जल्दी से जल्दी हो जाए यह देखने का भार मैं तुम पर छोड़ता हूं। तुम्हें यह भी देखना होगा कि नये और पुराने सभी सैनिक निरतर अभ्यास करते रहें।

पद्मनाभन : (दृढ़ स्वर) विश्वास रखिए, सब कुछ वैसा ही होगा जैसा आप चाहते हैं।

वेलुत्तम्पी : तब हमारी जीत निश्चित है।

[हंसते-हंसते पद्मनाभन के कंधे थप-

थपाता है। इसी समय दायीं ओर से धाय मां वहां आती है। दोनों भाई चौंकते हैं।]

वेलुत्तम्पी : मां, तुम कैसे आयीं ?

पद्मनाभन : मां, तुम यहां, इस समय ?

धाय मां : हां, इसी समय आना पड़ा। उस दिन तुमने मुझे अपनी योजना बताई थी। तब एक बात कहना भूल गयी थी मैं।

वेलुत्तम्पी : क्या बात मां ?

धाय मां : तुम्हारे मित्र मैकाले ने जासूसों का जाल बिछा रखा है। वे सब हमारे ही लोग हैं मात्तु तरकन के संगी-साथी।

वेलुत्तम्पी : जानता हूं।

धाय मां : लेकिन क्या तुमने भी उनके दल में अपने आदमी रख छोड़े हैं ?

वेलुत्तम्पी : प्रयत्न तो किया है।

धाय मां : प्रयत्न नहीं, जाल बिछाना होगा। कालीकट में, कोच्ची में और दक्खिन में भी। मैं जानती हूं कि सामूतिरी तुम्हारा साथ नहीं देगा। कोई साथ नहीं देगा। सिवाय उसके जिसका अपना कोई स्वार्थ है।

वेलुत्तम्पी : यह भी जानता हूं, फिर भी···

धाय मां : इसी 'फिर भी' को मन से निकाल दे वेलु और सब मोर्चों पर अपने विश्वासपात्र व्यक्तियों को नियुक्त कर।

वेलुत्तम्पी : यही कर रहा हूं मां, अब और ध्यान रखूंगा। आपके आशीर्वाद से···

धाय मां : मेरा आशीर्वाद ! उसकी चिन्ता मत कर। (हंसती है) अच्छा अब चलूं। अम्मु मेरी राह देख रही होगी। रास्ते में मिल गयी थी मुझे। (जाते-जाते) क्या जादू कर दिया है तुमने उस पर ? उसके उत्साह का तो कोई पार ही नहीं···

[जैसे आयी थी वैसे ही लौट जाती है। दोनों भाई एक क्षण उसे जाते देखते हैं। अंधकार उतरने लगता है। दोनों भाई महल वाले द्वार से भीतर जाते दिखाई देते हैं। अंधकार पूरी तरह छा जाता है। कई क्षण बाद जब प्रकाश की किरणें फूटने लगती हैं तो उठान पर अम्मुकुट्टी खड़ी दिखाई देती है। वह कहीं सुदूर क्षितिज के उस पार झांक रही है। दो क्षण बाद धाय मां दायीं ओर से मंच पर प्रवेश करती है, उसके पीछे-पीछे कुछ पंच लोग हैं। अम्मु क्षण के सहस्रवें भाग जितने समय में चौंकती है, फिर तुरन्त संभलकर नीचे उतरती है, मुस्कराती हुई।]

अम्मुकुट्टी : आइये-आइये। आप सबका स्वागत है।

धाय मां : अम्मु ! ये कुछ पंच लोग आये हैं। इन्हीं की सहायता से हमें काम करना है।

पंच एक : हम आपकी सहायता करने को तैयार हैं। मां ने हमें सब कुछ बता दिया है; पर क्या दलवा में इतनी शक्ति है कि···

अम्मुकुट्टी : (तड़प कर) आप दलवा की शक्ति के बारे में जानना चाहते हैं और वह भी मुझसे ! आप भूल गये कि महाराज धर्मराजा की मृत्यु के बाद

हमारे राज्य की क्या दुर्दशा हो गयी थी ? राज्य की बागडोर दुर्बल और नासमझ राजा बालराम वर्मा के हाथ में थी। इतिहास साक्षी है कि अक्सर प्रतापी राजाओं के जांनशीन दुर्बल होते हैं। यूनान के पेरिक्लिस के बाद, रोम में सीज़र के बाद, भारत में स्कन्दगुप्त के बाद यही हुआ था। हमारे राज्य में भी यही हुआ। षड्यन्त्रकारियों ने इस अवसर का लाभ उठाकर केशवदास जैसे प्रतिभा-सम्पन्न दीवान की हत्या कर दी। उसके बाद नये दीवान जयन्तन शंकरन नम्बूतिरि ने प्रजा पर कैसे-कैसे, क्या-क्या अत्याचार नहीं किये थे।

पंच दो : मैं साक्षी हूं उस निर्ममता का। दीवान की आज्ञा न मानने पर लोगों को पेड़ से बांध कर हण्टरों से पीटा जाता था। लगान के नाम पर वे पूरी फसल काट कर ले जाते थे। नमक और तम्बाकू जैसी चीजों पर भी मालगुजारी बढ़ा दी थी उसने।···

धाय मां : इतना ही नहीं, महाराज की निजी पालकी तक में बैठने का साहस किया था उसने···

अम्मुकुट्टी : साहस नहीं, दुस्साहस कहो मां। साहस तो किया था वेलुत्तम्पी ने। पालकी रोक कर उसने दीवान से कहा था—"नीचे उतर जाओ इस पालकी से। तुम्हें इसमें बैठने का अधिकार नहीं है।"

धाय मां : इसी बात से चिढ़कर तो उसने मात्तु तरकन से मिल कर प्रजा पर नये कर लगा दिये थे।

अम्मुकुट्टी : ऐयाशी के लिए पैसा चाहिए था उन्हें। उन्हें राज

की चिन्ता नहीं थी, चिन्ता थी विलास के उपकरणों की। लेकिन वे नहीं जानते कि विलासिता मन बहला सकती है, शक्ति नहीं दे सकती।

पंच तीन : क्यों नहीं दे सकती ? जिनमें जिन्दगी की चाह होती है वे ही कलाओं का आदर करते हैं।

धाय मां : लेकिन कलाओं का आदर विलासिता में डूबना नहीं है। निरीह प्रजा को सताना नहीं है।

कई स्वर : हां, मां ठीक कहती है। कला के उपासक विलासी नहीं होते। वे तो जनता के दुख-दर्द को और अधिक समझते है।

अम्मुकुट्टी : शाबाश ! अब समझी है आपने तत्त्व की बात। इसीलिए देश के इन शत्रुओं का अत्याचार जब सीमायें लांघ गया और समूचा राज्य उसकी आग में झुलसने लगा तो समझदार लोगों की चिन्ता का पार नहीं रहा। वे आश्रय के लिए इधर-उधर भटकने लगे। कौन उन्हें राह दिखायेगा ? कौन क्रांति का झण्डा फहरायेगा ? (**अल्प विराम**) तब उनकी दृष्टि एक व्यक्ति की ओर उठी। (**भावाकुल**) वही तो वेलुत्तम्पी थे। क्यों गई उनकी ओर दृष्टि ?···क्योंकि उनके फौलादी शरीर में एक शक्तिशाली आत्मा का निवास था। क्योंकि उन्होंने अपने यौवनकाल में अनेक चोरियों का रहस्य खोला था, क्योंकि उन्होंने महल से गायब महाराज धर्मराजा के हीरों का पता लगाया था।

धाय मां : तभी तो महाराज ने उसे उसी क्षण ताल्लुकेदार

बना दिया था।

पंच चार : मैं सब कुछ जानता हूं मां। ताल्लुकेदार बनने पर भी अन्याय के विरुद्ध प्रजा का साथ देते थे। तभी तो लोग उनकी शरण में गये थे। मैं भी उनमें था। तब उन्होंने कहा था—डरो नहीं। हम महाराज के पास चलेंगे। और वह गये थे हमें साथ लेकर। अय्यपन चम्पकरामन भी हमारे साथ थे। उन्होंने ही तो निडर होकर महाराज से दीवान के जुल्मो-सितम की कहानी कही थी।

पंच दो : और हमने एक स्वर मेंन ये दीवान की नियुक्ति की मांग की थी।

पंच चार : और महाराज सारी कहानी सुनकर चकित रह गये थे। उन्होंने तुरन्त दीवान को हटा दिया था और कान काट कर राज्य से निकाल दिया था।

पंच दो : और उन्होंने चम्पकरामन को अपना नया दीवान नियुक्त किया था और वेलुत्तम्पी को वाणिज्य-मंत्री।

अम्मुकुट्टी : लेकिन तब भी जयन्तम के मित्र कुंचु नीलम पिल्लै के षड्यन्त्र समाप्त नहीं हुए। उसने फिरंगियों से साठगांठ की, महाराज के कान भरे। दुर्भाग्य से सभी दीवान चम्पकरामन की मृत्यु हो गयी। उस समय राज्य को एक कर्त्तव्य-निष्ठ, न्यायप्रिय और दृढ़ इच्छाशक्ति वाले दीवान की आवश्यकता थी। तब राज्य में फैली अव्यवस्था से घबराये महाराज की दृष्टि कुशल प्रशासक वाणिज्य-मंत्री पर गयी।

पंच दो : यानी वेलुत्तम्पी पर गयी।

धाय मां : इतना सब जान कर भी आप पूछते हैं कि क्या दलवा में इतनी शक्ति है ?

पंच एक : अपने दलवा की यशोगाथ से मैं भी परिचित हूं, पर मैं तो इतना ही जानना चाहता था कि क्या हम शक्तिशाली फिरंगियों से लोहा ले सकते हैं···

अम्मुकुट्टी : ले सकते हैं बशर्ते आप, हम और सभी समझदार देशभक्त एक होकर उन्हें खत्म करने का व्रत लें। (अल्प विराम) मैं वचन देती हूं मैं सबसे आगे रहूंगी। क्या आप भी···

सामूहिक स्वर : हम तैयार हैं। हम तैयार हैं···

अम्मुकुट्टी : तो आओ मेरे साथ।

धाय मां : शाबाश ! आप लोगों से यही आशा थी। अम्मु, तुम उधर जाओ। मैं इधर जाती हूं दूसरे पंचों के पास···

[धाय मां तेजी से बायीं ओर जाती है। अम्मु उन लोगों के साथ उठान पर से होकर दायीं ओर जाती है। कई क्षण अंधकार रहता है। उसके बाद प्रकाश की किरणों के साथ-साथ सामूहिक संगीत का ओजस्वी स्वर उभरता हुआ पास आता है। पूर्ण प्रकाश होने पर साफा, अंगरखा और पजामा पहने अनेक युवक हाथों में तलवार, भाले और तीर-कमान लिए हुए आवेश में भरे-भरे दोनों ओर से मंच पर प्रवेश करते हैं, पहले दायीं ओर

से फिर बायीं ओर से। दायीं ओर वाले उठान पर होकर गाते-गाते बायीं ओर निकल जाते हैं]

युवक दल-1 : उठो आंखें खोलो कि पौ फट गयी है
युगों की अंधेरी निशा कट गयी है
नया प्राण लेकर हवा आ रही है
नया गान लेकर सबा आ रही है
कली खिल गयी है नया रूप धरकर
नया रंग भर कर किरण छा रही है
अंधेरा हटाते हुए हम चलेंगे
अंधेरे की ताकत बहुत घट गयी है
उठो आंखें खोलो कि पौ फट गयी है
युगों की अंधेरी निशा कट गयी है।[1]
[जाते-जाते वे दो क्षण रुक कर दर्शकों की ओर देखते हुए गाते हैं और फिर मार्च करते हुए जाते हैं। उसके तुरन्त बाद बायीं ओर से वैसा ही दल आता है। वह भी गा रहा है।]

युवक दल-2 : गगन उगलता आग हो,
छिड़ा मरण का राग हो,
लहू का अपने फाग हो,
अड़ो वहीं, गड़ो वहीं।
बढ़े चलो, बढ़े चलें।
चलो नयी मिसाल हो
चलो नयी मशाल हो

---

1. श्री भवानी प्रसाद मिश्र—'वन्दे मातरम्', पृष्ठ 44

बढ़ो नया कमाल हो
बढ़े चलो, बढ़े चलो।[1]

[दोनों दल बाहर जाते हैं। फिर लौटते हैं और उठान पर खड़े होकर नारे लगाते हैं। भाले-तलवार भांजते हैं।]

देश की आज़ादी जिंदाबाद
हमारी स्वतन्त्रता अमर रहे

[बार-बार नारे गूंजते हैं। फिर वे गाते-गाते नीचे आकर दोनों ओर से मंच से बाहर चले जाते हैं। उसी के साथ बहुत-से नागरिक दोनों ओर से आकर इधर-उधर खड़े हो जाते हैं और बातें करने लग जाते हैं।]

नागरिक-1 : आजकल हमारे राज्य के हर गांव में, हर कस्बे में एक नया जोश उमड़ पड़ा है। जहां देखो युद्ध की तैयारी हो रही है। कहते हैं फिरंगी हमारे देश पर कब्जा करना चाहते हैं।

नागरिक-2 : हां, हमारे दलवा यही कहते हैं। फिरंगी लोग हमारे कामों में दखल देने लगे हैं। आठ लाख रुपये नजराने के मांगते हैं।

[तभी तीसरा नागरिक तेजी से आता है। पीछे-पीछे अम्मुकुट्टी है।]

नागरिक-3 : (चिढ़कर) हां, मांगते हैं लेकिन किसके कारण ? दलवा के कारण ही तो। उसी के कहने में आकर हमारे महाराज ने उस अपमानजनक सन्धि पर

---

1. श्री सोहनलाल द्विवेदी—'वन्दे मातरम्', पृष्ठ 39

हस्ताक्षर किए थे। गुलामी की नींव तो उसी दिन पड़ गई थी। तब दलवा को नहीं सूझा था ?

अम्मुकुट्टी : इसका जवाब मैं दूंगी। दलवा सब कुछ जानते थे, लेकिन तब विरोध करने का अर्थ था सर्वनाश। उन दिनों लॉर्ड वैलेजली सारे उत्तर भारत पर कब्जा करता आ रहा था। उस समय हमने विरोध किया होता तो वे हमारे राज्य पर भी तुरन्त कब्जा कर लेते।

नागरिक-3 : तो क्या सन्धि पर हस्ताक्षर करने से राज्य बच गया ?

अम्मुकुट्टी : राज्य बचा या नहीं बचा, पर बचाने के उपायों पर विचार करने का समय अवश्य मिल गया। समझौता करके ही हम यह समय पा सकते थे। वक्त देखकर ही बुद्धिमान लोग काम करते हैं। तब फिरंगियों से लोहा लेने के लिए तैयारी करने की जरूरत थी। सेना को प्रशिक्षित करना था। दूसरे राज्यों को साथ लेना था। आज कोच्ची हमारे साथ है। मलाबार के सामूतिरी को भी हमने दावत दी है।

नागरिक-1 : दावत तो सुना है फ्रांसीसियों, अमरीकियों और मराठों को भी दी है।

नागरिक-3 : दावत देना एक बात है और उन लोगों का उसे कबूल करना दूसरी बात है। (**व्यंग्य से मुस्कराता है**) सच बात तो यह है कि दलवा अपनी शक्ति बढ़ा रहा है। उसे अपना पद जाता दीखता है।

अम्मुकुट्टी : (आवेश) बस, इतना ही जान पाये इतने दिनों में अपने दलवा को ? वह इतने छोटे नहीं हैं कि राज्य को संकट में डालकर अपने को शक्तिशाली बनाएं। उन्होंने तो अपना विवाह तक नहीं किया। अपने को राज्य के लिए समर्पित कर दिया है। उन्होंने अपनो धाय मां के साथ पक्षपात करने वाले अधिकारी तक को नहीं छोड़ा। उसे नौकरी से अलग कर दिया।

[तब तक दूर खड़े दूसरे नागरिक पास आ जाते हैं और ध्यान से उनकी बातें सुनते हैं।]

नागरिक-4 : हां, यह बात बिल्कुल ठीक है। दलवा सबके साथ एक जैसा व्यवहार करते हैं। वे हम सबके हितैषी हैं।

नागरिक-5 : हां, उन्होंने राज्य से भ्रष्टाचार दूर किया है।

नागरिक-6 : उन्होंने राज्य को खुशहाल बनाने के लिए सड़कें बनवायीं, बाजार खोले।

नागरिक-4 : मंदिर बनवाये। नये-नये भवनों का निर्माण करवाया।

नागरिक-5 : उन्होंने राज्य की आय बढ़ाई। लगान चोरी करने वालों को दंडित किया। आज कोई जमाखोरी करके देखे तो सही।

नागरिक-3 : लेकिन किस कीमत पर किया यह सब ? राज्य के एक वर्ग को शत्रु बनाकर।

अम्मुकुट्टी : चोर को चोरी करते पकड़ोगे तो वह शत्रु बनेगा ही। लेकिन इसका यह मतलब तो नहीं कि उन्हें खुलेआम चोरी करने दी जाए ? प्रजा को

सताने की खुली छूट दे दी जाए ? उसे भूखा मार कर अपनी तिजोरी भरने दी जाए ?

नागरिक-3 : (तीव्र होकर) लेकिन क्या यह सच नहीं कि दलवा कभी कर्नल मैकाले के परम मित्र थे ?

अम्मुकुट्टी : किन्तु तब उन्हें विश्वास था कि मैकाले राज्य का मित्र है। वह राज्य के साथ विश्वासघात नहीं करेगा। लेकिन बाद में जो कुछ हुआ उससे उनका भ्रम टूट गया। फिर उन्होंने वही किया जो एक स्वाधीनता-प्रेमी, स्वाभिमानी व्यक्ति कर सकता है। (**बोलते-बोलते वह ऊपर उठान पर जाकर खड़ी हो जाती है।**) अब वह तुम्हारे सामने है। तुम लोग ही उसकी शक्ति हो। तुम चाहोगे तो वह विजयी होगा। तुम चाहोगे तो वह मिट जायेगा। इसलिए तुम्हें सोच-समझकर निर्णय करना होगा। राज्य की रक्षा करने के लिए अपने छोटे-मोटे मतभेद भुलाने होंगे और एक-जुट होना होगा। हमारी एकता ही हमारी आजादी को बचा सकती है। एक होकर ही हम शत्रु का मुकाबला कर सकते हैं। बंटे रहेंगे तो शत्रु हमें कुचल देगा। नारीकेल-कुंजों से आवेष्ठित हमारी यह शस्य श्यामला धरती, सागर की उत्ताल तरंगें जिसकी रक्षा करती हैं, ऐसा हमारा यह शांत, सौम्य तपोवन सरीखा प्रदेश, यह सब विदेशियों के पैरों के नीचे रौंद दिया जायेगा। मैं तो यह कल्पना करके कांप उठती हूं। क्या हम सचमुच अपनी मां को

विदेशियों द्वारा अपमानित होने देंगे ? क्या हम मात्तु तरकन जैसे विश्वासघातियों का साथ देकर अपनी प्यारी मातृभूमि का सौदा करेंगे ?

नागरिक : (समवेत स्वर) नहीं, नहीं, ऐसा नहीं होगा। दलवा हमारा हितैषी है, हमारा नेता है। हम उसका साथ देंगे। हम मातृभूमि के लिए मर मिटेंगे।

देश की आज़ादी जिन्दाबाद।
हमारी स्वाधीनता अमर रहे।

अम्मुकुट्टी : मुझे खुशी है कि आप सब स्वाधीनता का अर्थ समझते हैं। मैं नहीं कहती कि दलवा ने कभी गलती नहीं की। मैं यह भी मानती हूं कि उन्होंने अपराधियों को कड़े से कड़ा दण्ड दिया। उससे जनता में आतंक फैल गया। पर मैं पूछती हूं कि यदि वह ऐसा न करते तो क्या भ्रष्टाचार मिटता ? मैं पूछती हूं कि क्या उन्होंने कभी जनता की शिकायत सुनने से इंकार किया ? मैं पूछती हूं कि क्या उन्होंने वृक्षों के नीचे अदालतें लगाकर जनता को न्याय नहीं दिया ?

नागरिक-1 : दिया।

नागरिक-2 : न्याय ही नहीं दिया सुरक्षा भी दी, शान्ति भी दी।

नागरिक-3 : सुशासन भी दिया। समृद्धि भी दी।

अम्मुकुट्टी : हां, समृद्धि भी दी। वाणिज्य केन्द्र आलपुरा को नया रूप देकर विकसित किया। चंगनाशेरी और आलङ्ङाड जैसे नगरों में बाज़ारों की स्थापना की। नयी सड़कें बनवाईं। पुरानी ठीक

कीं। इन सुधारों का ही परिणाम है कि सरकार का खजाना भरा हुआ है। पुराने कर्ज चुका दिये गये हैं। (अल्प विराम) आप शायद नहीं जानते कि उन दिनों फिरंगियों ने भी उनकी प्रशंसा की थी। उन्हें समर्थ और प्रतिभाशाली दीवान बताया था। लेकिन आज जब उन्होंने उनकी बुरी मंशा को भांप लिया है तो वे उनके शत्रु हो गए। (अल्प विराम) नागरिको! आपके दलवा ने प्रतिज्ञा की है कि वे अपने जीते जी उन्हें अपने नापाक इरादों में सफल नहीं होने देंगे। आप क्या कहते हैं?

नागरिक-1 : हम दलवा के साथ हैं। हम फिरंगियों की चाल सफल नहीं होने देंगे।

नागरिक : (समवेत स्वर) नहीं होने देंगे। नहीं होने देंगे। हम अपने देश को फिरंगियों के हाथ में नहीं जाने देंगे।

देश की आजादी जिन्दाबाद।
हमारी स्वतन्त्रता अमर रहे।

[तभी सैनिकों के दल पहले की तरह गाते हुए आते हैं और उठान पर होकर बाहर चले जाते हैं। कुछ नागरिक भी उनके साथ जाते हैं। कुछ सैनिक इधर-उधर अभ्यास करते दिखाई देते हैं। अन्धकार उतरने लगता है। सब चले जाते हैं। केवल नागरिक-3 अपने एक साथी के साथ पीछे रह जाता है। दोनों मंच के कोने में जाकर रहस्यमय ढंग से बातें करते हैं।]

नागरिक-3 : देखता हूं बात बहुत आगे बढ़ गयी है। दलवा की इस प्रेमिका ने सारे राज्य में आग लगा दी है।

नागरिक-7 : यह प्रेमिका नहीं है, दलवा की चेतना है। इसके जागते ही सारे राज्य में शोले भड़क उठे हैं।

नागरिक-3 : हमें तुरन्त मात्तु तरकन को यह सब समाचार देने होंगे।

नागरिक-7 : (हंसकर) हम मात्तु तरकन को यह समाचार देंगे और मात्तु तरकन मैकाले को।

नागरिक-3 : (तेजी से) हंसो नहीं। समाचार देने के अतिरिक्त हमें जनता में भी काम करना है।

नागरिक-7 : हां, करना है। मैं जानता हूं।

नागरिक-3 : तो सुनो, मैं मात्तु तरकन के पास जा रहा हूं। तुम कुछ विश्वासपात्र व्यक्तियों को लेकर अम्मुकुट्टी के पीछे जाओ और साम, दाम, दण्ड, भेद, जैसे भी हो उसका प्रभाव कम करो।

नागरिक-7 : समझ गया, ऐसा ही होगा, लेकिन···

नागरिक-3 : लेकिन का सब प्रबन्ध है। मेरे साथ आओ। मैं तुम्हें अभी पांच हजार रुपये दूंगा। आवश्यकता होने पर आगे और भी मिलेंगे।

नागरिक-7 : तब तो पद्मनाभ देव हमारे साथ हैं और हमारी जीत निश्चित है। दलवा से मुझे भी बदला चुकाना है। (क्रुद्ध होकर) उसने मेरे भाई की छाती में कीलें घुसेड़ी थीं। मैं उसके भेजे में घुसेड़ूंगा।

[दोनों बाहर जाते हैं। अन्धकार पूरी तरह से छा जाता है। कई क्षण बाद जब फिर प्रकाश होता है तो समय रात्रि का है। लैम्प जल रहा है। मंच के बायीं ओर एक शानदार मेज के सामने कर्नल मैकाले कुर्सी पर बैठा है और मेज के इस ओर उसके सामने मात्तु तरकन हाथ जोड़े खड़ा है। एक क्षण दोनों एक-दूसरे को देखते हैं। फिर मैकाले एक लम्बी 'हूं' के बाद बोलता है।]

मैकाले : टो टुम कहना चाहटे हो कि पूरे राज्य में शोले भड़क उठे हैं। हर आडमी विद्रोही हो गया है। टुम क्या कर रहे ठे इटने डिन से ?

तरकन : हुजूर, मैंने जनता में अपने आदमी छोड़ रखे हैं। समझा-बुझाकर और जरूरत पड़ने पर लालच देकर उन्हें बरगलाने की पूरी कोशिश हो रही है, पर वह जो अम्मुकुट्टी है, उसका जादू मैं नहीं तोड़ पा रहा। वह सचमुच जादूगरनी है। बहा ले जाती है सबको अपनी ओजस्वी वाणी से।

मैकाले : टुम उस डिन कह रहे ठे कि वह टम्पी से शाडी करना चाहटी है ?

तरकन : जी हां, सुना था। फिर सुना कि तम्पी ने कहा—मैं शादी कर लूंगा तो राज्य का काम नहीं कर पाऊंगा। शादी करूं या राज्य की सेवा करूं, एक बात हो सकती है। तुम अगर मुझसे सच-मुच प्यार करती हो तो वही काम करो जो

मुझे प्रिय हैं।

मैकाले : और वह वही काम कर रही है। टम्पी विद्रोही हो गया है और वह जनटा को विद्रोह के लिए उकसा रही है। (**अल्प विराम**) हमारे डेश में ऐसी औरट होटी तो हम उसकी पूजा करटे।

तरकन : (**अचंभे-सा**) हुजूर ! मैं उसे रास्ते से हटाने की पूरी कोशिश कर रहा हूं, लेकिन क्या करूं वेलुत्तम्पी की धाय मां भी उसके साथ है। वह बड़ी चालाक औरत है। वह मेरी हर चाल विफल कर देती है। फिर भी मैं इन दोनों को रास्ते से हटाकर रहूंगा। लेकिन (**दोनों हाथ मेज पर टिकाकर आगे झुकता है।**) आपको पता है कि कोच्ची का दीवान तम्पी के साथ मिल गया है।

मैकाले : (**हंसकर**) वह सब हमको पटा है। हमको यह भी पटा है कि टम्पी ने कालीकट के जमोरिन को भी खट लिखा ठा। लेकिन वह हमारे पास पहुंच गया।

तरकन : (**चकित**) सच ! किसने किया यह अच्छा काम ?

मैकाले : (**व्यंग्यपूर्ण हंसी**) अच्छा काम या विश्वासघाट ? जो भी हो हमारे लिए तो यह अच्छा काम है। हम अगर ऐसे अच्छे काम न करवा सकें टो राज कैसे करेंगे ? जमोरिन के दीवान ने यह खट कालीकट के कैलेक्टर को भेज डिया ठा। उसने हमें भेज डिया। हमें टो यह भी पटा है कि टम्पी फ्रांसीसियों, अमरीकियों और मराठों से साठ-गांठ करने की कोशिश कर रहा है। कुछ लोग उसका साठ डे सकटे हैं, पर उससे कुछ नहीं

होने सकेगा। हमारे टोपों के सामने टलवार कैसे ठहरेगी ? हमें डर है टो जनटा में फैले विड्रोह से डर है। जनटा को अपने साठ रखने के लिए टुम्हें काम करना है।

तरकन : वह सब इन्तजाम मैंने कर लिया है।

मैकाले : टुम जानटा है कि जब हमने टुम्हारे कहने पर महाराज से तुरन्त आठ लाख रुपये देने को कहा टो टम्पी ने हमारी बहुत खुशामड की। कुछ रुपये लेकर हमारे पास आया ठा वह, पर हमने उसकी बाट नहीं मानी। महाराज को अपने टाज के हीरे गिरवी रखने पड़े। उन्होंने गवर्नर को चिट्ठी लिखी।

तरकन : सच ! क्या लिखा महाराज ने ?

मैकाले : (हंसकर) उन्होंने लिखा है, मुझे साहूकारों और कम्पनी ने इटना टंग और अपमानिट किया है कि मेरा खाना-पीना और सोना सब जहर हो गया है। उसने यह भी लिखा कि मुझे रेजीडेंट के पद से हटा डेना चाहिए।

[दोनों हंसते हैं।]

तरकन : उसके कहने से आपको गवर्नर साहब कैसे हटा सकते हैं ? उसने भी तो आपके कहने से तम्पी को नहीं हटाया था।

मैकाले : लेकिन अब उसने खुड हटना मंजूर कर लिया है।

तरकन : क्या (चकित) क्या कहते हैं हुजूर ?

मैकाले : हमने उसको लिखा था कि अगर वह दीवान का पद छोड़कर मलावार जाकर रहे तो हम उसे

500 रु० महीना पेंशन देंगे।

तरकन : उसने आपकी यह बात मान ली ?

मैकाले : हां, मान ली।

तरकन : (घबराकर) नहीं, नहीं, मैं नहीं मान सकता। यह एक धोखा है।

मैकाले : ढोखा नहीं है। उसका खट आया है। वह डीवान का पड छोड़ रहा है। वह 28 डिसम्बर को एल्लपी से मलाबार के लिए रवाना होगा और हमारी छट्रछाया में रहेगा। उसने यह भी लिखा है कि रास्टे में उसकी जान को खटरा हो सकटा है, इसलिए उसे आटमरक्षा के लिए कुछ सैनिक चाहिएं।

तरकन : (घबराकर) और आपने वे सैनिक भेज दिये ?

मैकाले : हां, मैंने अपने अंग-रक्षक उसके अंग-रक्षक बना कर भेज डिये।

तरकन : आह ! यह आपने क्या किया ! यह तो सरासर एक धोखा है, षड्यन्त्र है।

मैकाले : ढोखा, षड्यंत्र, नो, नो, ऐसा नहीं होने सकटा।

[उसी क्षण एक बदहवास फिरंगी सैनिक का प्रवेश]

फिरंगी सैनिक : सर, सर, भागिए यहां से। कोच्ची की डेसी फौजों ने हमला कर दिया है। हम घिर गये हैं। बचने का कोई रास्टा नहीं है।

मैकाले : (कांपकर) क्या···समझा···लेकिन···लेकिन···

[दूर से आता सैनिकों का शोर। एक और सैनिक का प्रवेश]

फिरंगी सैनिक : सर, सर, हमारे सभी सैनिक मारे गए। आप

जल्डी बन्दरगाह की ओर भागिए इढर से। वहां हमारे जहाज खड़े हैं। इढर से, इढर से।

[अफरा-तफरी में वे सब बाहर भागते हैं। दूसरे ही क्षण ऊपर के मार्ग से कोच्ची के सेनापति कुछ सैनिकों के साथ आते हैं।]

सेनापति : कहां है वह रेजीडेंट का बच्चा जिसने···

सैनिक : यहां तो कोई नहीं, कोई भी नहीं।

[सब इधर-उधर झांकते हैं।]

सेनापति : कोई भी नहीं। (**निराश स्वर**) तो चिड़िया हाथ से निकल गयी। हमारी योजना विफल हो गयी। आह! क्या सोचा था, क्या हो गया!

[निराशा में डूबे वे सब तेजी से बाहर जाते हैं। शोर के बीच परदा गिर जाता है।]

अंक 2

[परदा उठने पर मंच पर धीरे-धीरे प्रकाश उभरता है। दायीं ओर खुले स्थान पर धीरे-धीरे आकर कुछ लोग खड़े हो जाते हैं। उनमें भाले व तलवारों से लैस सैनिक भी हैं। वे थके प्रतीत होते हैं। दो क्षण चिन्ताकुल रहने के बाद बातें करने लगते हैं।]

सैनिक-1 : चार दिन के भयंकर युद्ध के बाद कोल्लम में भी हमारी सेना को पीछे हटना पड़ा।

सैनिक-2 : हटते न तो क्या करते ? तलवार से तलवार भिड़ सकती है और भिड़ी भी। भाले से भाले टकरा सकते हैं और टकराये भी। लेकिन उनकी आग उगलती तोपों का मुकाबला करने के लिए हमारे पास कुछ नहीं है। तब रक्त की नदियां ही बह सकती थीं और बह रही हैं।

सैनिक-3 : लेकिन यह रक्त मातृभूमि की रक्षा के लिए बह रहा है, इसलिए हमारा मनोबल अभी भी ऊंचा है।

सैनिक-1 : मनोबल तो उस अम्मुकुट्टी के कारण ऊंचा है। वह साक्षात् रणचण्डी है। उसकी आवाज सुन-

कर मुर्दे भी उठ कर खड़े हो जाते हैं।

सैनिक-2 : पर कब तक ?

सैनिक-3 : सैनिक कब तक की चिन्ता नहीं करते। उनके लिए यह क्षण ही सत्य होता है। चलो, आगे बढ़ो। हमारे साथी आ रहे हैं।

[उसी क्षण अम्मुकुट्टी के पीछे-पीछे बहुत-से सैनिक मंच पर प्रवेश करते हैं। अम्मुकुट्टी सदा की तरह उत्साहित है।]

अम्मुकुट्टी : मैं जानती हूं हमें तोपों का सामना करना पड़ रहा है। मैं यह भी जानती हूं कि हमारे कप्तान बहुत योग्य नहीं हैं। जो योग्य थे, वह शहीद हो गये। फिर भी हमें युद्ध जीतना है और हम जीतेंगे। हम अपनी मातृभूमि को गुलाम नहीं होने देंगे। हम प्राण दे देंगे पर गुलामी का पट्टा गले में नहीं डालेंगे। हमारा प्यारा दलवा हमारे साथ है। वह सेना का संचालन करते हैं। घूम-घूमकर जनता का उत्साह बढ़ाते हैं, किसलिए ? इसलिए न कि वे फिरंगी हमारी प्यारी मातृभूमि को कलंकित न कर सकें। हमारे नारीकेल और केलों के कुंज उनकी शरणगाह न बनें। हमारे समुद्र की नाचती-थिरकती लहरें उनके चरण न धोयें। (अल्प विराम) ठीक है कोच्ची में हमारी हार हुई। रेंजीडेंट निकल भागने में सफल हो गया। यह भी ठीक है कि कोल्लम में भी हम पराजित हुए। युद्ध में जय या पराजय के अतिरिक्त और हो क्या सकता है ? इसलिए हम निराश क्यों हों ? आज पराजित हुए हैं

तो कल जीतेंगे भी।

[तभी एक उद्घोषक घोषणा करता हुआ मंच पर प्रवेश करता है।]

उद्घोषक : सुनें, सुनें, सभी नागरिक, सभी सैनिक सुनें। सुनें, सुनें, सब स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़ सब सुनें, हमारे दलवा वेलुत्तम्पी ने अब कुंडरा को अपना सदरमुकाम बना लिया है। वहीं से वे युद्ध का संचालन करेंगे। वहीं वे कल एक महत्त्वपूर्ण घोषणा भी करेंगे। सुनें, सुनें, सब जन सुनें, कल कुंडरा में श्री देवी भद्रकाली के मैदान में इकट्ठे होकर उस घोषणा को सुनें। सुनें, सुनें, सुनें, सब नागरिक, सब सैनिक सुनें···

[घोषणा करता-करता बाहर चला जाता है। एक क्षण उसकी दूर से आती आवाज गूंजती है। फिर जैसे सब जाग उठते हैं। अम्मुकुट्टी सबसे पहले बोलती है।]

अम्मुकुट्टी : यही तो मैं बताने जा रही थी। एक और बात बतानी है मुझे। (धीरे से) खबर मिली है कि फिरंगियों की सेना दक्खिन की पहाड़ी घाटियों से होकर हमला करने की योजना बना रही है। हमें डरना नहीं है, निराश भी नहीं होना है बल्कि एक तन और एक मन होकर उनकी योजना को विफल बनाना है। आओ अब हम सब चलें, कुंडरा चलें। गाते-झूमते चलें।

[और अम्मुकुट्टी गाते-गाते उठान पर होती हुई बाहर जाती है। कुछ नागरिक

उसके साथ और कुछ दाहिनी ओर चले जाते हैं।]

गगन उगलता आग हो
छिड़ा मरण का राग हो
लहू का अपने फाग हो
अड़ो वहीं, गड़ो वहीं
बढ़े चलो, बढ़े चलो
चलो नयी मिसाल हो
चलो नयी मशाल हो
बढ़ो नया कमाल हो
बढ़े चलो, बढ़े चलो .

[धीरे-धीरे अंधकार उतरने लगता है औ शीघ्र ही वह सब कुछ को ग्रस लेता है. अभी भी वहां गीत के स्वर गूंज रहे हैं। उनके शांत होते-होते प्रकाश उभरना शुरू होता है। पूरा प्रकाश होने पर दायीं ओर भारी भीड़ जमा होने लगती है। वे दल बनाकर बातें करते हैं। वे उत्सुक और उत्तेजित हैं।]

नागरिक-1 : आज सचमुच कोई महत्त्वपूर्ण घटना घटने वाली है।

नागरिक-2 : समाचार कुछ बहुत अच्छे नहीं हैं।

नागरिक-3 : तभी तो उत्साह बढ़ाने की जरूरत है, लेकिन क्या बढ़ा सकेंगे ?

नागरिक-4 : क्या तुम समझते हो दलवा फिरंगियों को पराजित कर सकेंगे ?

नागरिक-5 : फिरंगियों की तोपों का हम क्या खाकर

मुकाबला करेंगे ?

नागरिक-6 : हम तोपों का मुकाबला नहीं कर सकते तो उनके तलवे चाटें ? हूंऊं···तुम कायर हो। (अल्प विराम) मरते सभी हैं पर मरने-मरने में अन्तर होता है। कुछ खाट पर लेटे-लेटे गुजर जाते हैं। कुछ हैं जो किसी आन पर मर मिटते हैं।

नागरिक-4 : और जो आन पर मर मिटते हैं वे सबको याद आते हैं।

नागरिक-6 : इसीलिए मैं कहता हूं, अगर हम मार नहीं सकते, मर तो सकते हैं।

[उसी समय उठान पर एक अधिकारी दिखाई देता है।]

अधिकारी : नागरिको, दोस्तो, शान्त हो जाओ। हमारे प्रिय दलवा आ रहे हैं।

[उसी क्षण दलवा साथियों से घिरे वहां आते हैं। अम्मुकुट्टी भी उनके साथ है। वे एक क्षण नागरिकों को हाथ उठाकर शान्त करते हैं। दूसरे क्षण दो कदम आगे बढ़ते हैं। भीड़ से आंखें मिलाते हैं और गम्भीर स्वर में बोलना शुरू करते हैं।]

वेलुत्तम्पी : मेरे दोस्तो, साथियो, नागरिको ! अब यह निश्चित हो चुका है कि यदि हमें अपने तिरुवितांकुर राज्य की रक्षा करनी है तो हमें कुछ विशेष प्रयत्न करने पड़ेंगे। इसलिए मैं सभी महानुभावों, ब्राह्मणों, शूद्रों, सरकारी नौकरों, सभी जातियों-वर्गों के लोगों के सामने यह

घोषणा करना चाहता हूं।

परशुराम द्वारा स्थापित हमारे केरल राज्य में चेरमान पेरुमाल के शासनकाल तक और उसके बाद के भी सैकड़ों वर्षों में यहां तक कि वर्तमान राजवंश के शासनकाल तक, कभी किसी ने कहीं अनुचित हस्तक्षेप करने का अपराध नहीं किया। सन् 933[1] में जिन महाराज का देहान्त हुआ, वे बहुत दूरदर्शी थे। समझ गए थे कि भविष्य में राज्य की आय बहुत कम रह जाएगी। और आगे आने वाली पीढ़ियां शासन का उत्तरदायित्व न संभाल सकेंगी। इसलिए उन्होंने राज्य को श्री पद्मनाभ देव के चरणों में समर्पित कर दिया था।

तब से यहां के शासक श्री पद्मनाभ देव के प्रतिनिधि के रूप में राज्य करते आ रहे हैं। वे भोग-विलास से दूर रहकर तप और व्रत में निष्ठा रखते रहे हैं। स्वयं दुख उठा कर प्रजा को सुखी रखना उनका उद्देश्य रहा है। प्रभु की आराधना, मुरजपन, भद्रदीप और अन्नसत्र ऐसे सत्कर्मों में उनकी रुचि थी। इसीलिए आज प्रजा सुख और समृद्धि से भरपूर है। इस कलियुग में आसेतु हिमालय ऐसा धर्मनिष्ठ राज्य और कहीं नहीं है।

मुहम्मद अली खां आर्काट की विजय के बाद त्रिचनाप्पल्लि आदि दक्षिण के प्रदेशो का

---

1. मलयालम वर्ष

शासक बन गया था। वह मित्र भाव से हमसे छः हजार रुपये वार्षिक और एक हाथी लेता रहा, उसके बाद टीपू सुल्तान और फिरंगियों के शक्तिशाली बनने तक यह राज्य किसी भी उपद्रव का शिकार नहीं हुआ। फिरंगियों की ईस्ट इंडिया कम्पनी अधिक ईमानदार और विश्वसनीय मालूम देती थी इसीलिए उसे अंचुतेङ्ङ में किला बनाने की अनुमति दी गयी। आशा थी कि उन पर हमारा प्रभाव बराबर बना रहेगा।

लेकिन बाद में जो अनुभव हुआ वह इसके बिलकुल विपरीत था। बहुत जल्दी सारी दुनिया जान गयी कि उससे बड़ी विश्वासघात करने वाली और कोई जाति नहीं है। पहले तो उसने अपने मित्र और रक्षक नवाब को धोखे से नष्ट किया। फिर आस-पास के राज्यों में प्रज्वलित ऐश्वर्य-दीप को बुझाया। उसके बाद हमारे राज्य में प्रवेश किया और अपने चिर-परिचित हथकण्डों से उसे नष्ट करने का प्रयत्न करने लगे।

[जन-समुदाय अभी तक स्तब्ध उस घोषणा को सुन रहा था। यहां आकर सहसा वे सब एक स्वर में चिल्ला उठते हैं।]

सामूहिक स्वर : लेकिन अब हम ऐसा नहीं होने देंगे। ऐसा नहीं होने देंगे।

नागरिक-1 : हम अपने राज्य के लिए सब कुछ निछावर कर देंगे।

नागरिक-2 : हम विश्वासघाती कम्पनी की ईंट से ईंट बजा देंगे।

नागरिक-3 : हम अपनी आजादी की शर्त पर किसी से समझौता नहीं करेंगे।

अम्मुकुट्टी : (आगे आकर) हम एक हैं।

सामूहिक स्वर : एक रहेंगे।

अम्मुकुट्टी : देश की आजादी

सामूहिक स्वर : जिन्दाबाद

अम्मुकुट्टी : हमारी स्वतन्त्रता

सामहिक स्वर : अमर रहे।

वेलुत्तम्पी : शाबाश। मुझे आपसे यही आशा है। लेकिन अभी मैं आपको पूरी बातें कहां बता पाया हूं! जब हमारा टीपू सुलतान से युद्ध हुआ तब उन्होंने 'हमारी सहायता करेंगे' यह भरोसा दिलाकर हमसे दस लाख वराहन हड़प लिए। इसके बाद सन् 968[1] में हम फिर विवश हो गए नयी सन्धि करने को। हमने माना कि हम उन्हें प्रति वर्ष 6 लाख रुपये देते रहेंगे, पर वे राजकाज में कोई हस्तक्षेप नहीं करेंगे। इससे अधिक एक पैसा नहीं मांगेंगे।

लेकिन बहुत जल्दी वे अपने वचन से फिर गये। उन्होंने हमें विवश किया कि हम अपने राज्य में रेजीडेंट रखें। कम्पनी की सेना की तीन टुकड़ियां कोल्लम में रहें। हम इनके रहने के लिए घर बनाकर दें। इनके तरह-तरह के अत्याचार सहें। क्या यह सांप को दूध पिलाना

---

1. मलयालम वर्ष

नहीं है ?

[जनता अब और भी बेचैन हो उठी है। चिल्ला पड़ती है।]

सामूहिक स्वर : सांप को दूध पिलाना आत्महत्या है। हम आत्म-हत्या नहीं करेंगे।

वेलुत्तम्पी : नागरिको, भद्रपुरुषो ! अभी कहानी का अंत कहां हुआ है ? सन् 980[1] के पौष मास में उन्होंने हमें फिर आदेश दिया कि हम उन्हें दो लाख रुपया प्रतिवर्ष और दें, नहीं तो वे हम पर आक्रमण कर देंगे। और उन्होंने हमारे राज्य की सीमा पर अपनी तोपें लगा दीं। (अल्प विराम)

दैव का प्रकोप मानकर हम विवश हो गये उनकी शर्तें स्वीकार करने को। लेकिन वे फिर भी नहीं रुके। खून जो लग गया था उनके मुंह को। उन्होंने फिर प्रस्ताव किया कि हम राज्य की देशी सेना का विघटन कर दें। ईश्वर-आराधना और साधु-सन्तों की सेवा पर जो खर्च करते हैं उसे भी बन्द कर दें। यह सब पैसा उन्हें दें। राजकाज में रेजीडेंट जो सलाह यानी जो दखल दे उसे स्वीकार करें। (अल्प विराम) हम उनकी बातों से सहमत नहीं हो सके।

सामूहिक स्वर : कोई भी स्वाभिमानी इन अपमानजनक प्रस्तावों से सहमत नहीं हो सकता।

---

1. मलयालम वर्ष

वेलुत्तम्पी : हम भी सहमत नहीं हुए। हमने बड़ी विनम्रता-पूर्वक अपना पक्ष उनके सामने रखा, लेकिन जानते हो क्या उत्तर मिला हमें ?

कई नागरिक : क्या उत्तर मिला ?

वेलुत्तम्पी : उत्तर मिला कि मैं दीवान का पद छोड़कर कहीं दूर जा बसूं। इसके लिए काफी वेतन मिलेगा मुझे। और राज्य का काम अब कर्नल मैकाले देखेगा। अगर हम ऐसा नहीं करते तो युद्ध होकर रहेगा। ऐसा ही एक पत्र उन्होंने महाराज को लिखा, लेकिन महाराज ने उनकी शर्तें मानने से इंकार कर दिया। तब मैकाले ने बिना महाराज की आज्ञा लिए अपने कुछ सैनिकों को समुद्र मार्ग से कोल्लम में पहुंचा दिया। महिलाओं को कहीं दूर भेज दिया।···फिर भी हम नहीं चाहते थे कि युद्ध हो, लेकिन अब ऐसा लगता है कि यदि हम आत्मरक्षा का कोई उपाय नहीं करते तो भविष्य में आने वाली आपदाओं को झेल नहीं सकेंगे।

छल-कपट से राज्य हथियाना उनकी परम्परागत नीति है। अगर हमारा राज्य उनके अधिकार में चला गया तो दोस्तो (आवेश में स्वर गूंजता है) वे हमारे राजमहलों और देवालयों को, जन-सभाओं को, हमारी परम्पराओं और रीति-नीतियों—सबको नष्ट कर देंगे। नमक से लेकर सभी वस्तुओं पर कर लगा देंगे, खेतों को नाप कर लगान वसूल करेंगे। छोटे-छोटे अपराधों के लिए कड़े से कड़ा दण्ड देंगे। मन्दिरों पर

झण्डे फहरायेंगे। जाति-भेद की चिन्ता किए बिना ब्राह्मण-नारियों से दुर्व्यवहार करेंगे। ऐसे नाना प्रकार के अधर्म करने में उन्हें तनिक भी संकोच नहीं होगा। (क्षणिक विराम) कोई अधर्म न हो, मर्यादा का उल्लंघन न हो, कोई हमारी हंसी न उड़ाये—यह सब देखने के लिए हमने कोई प्रयत्न उठा नहीं रखा है। फिर भी अगर कुछ होता है तो उसे हम ईश्वर का निश्चय मानकर स्वीकार करें।

[यहां आकर वेलुत्तम्पी मौन हो जाता है। दृष्टि अम्मुकुट्टी की दृष्टि से मिलती है जो अब तक एकटक उसे देखे जा रही थी। उसी क्षण चारों ओर फैली जनता एकसाथ चिल्ला उठाती है मानो तूफान आ गया हो।]

सामूहिक स्वर : नहीं, नहीं, हम उनके अत्याचार नहीं सहेंगे। नहीं सहेंगे, नहीं सहेंगे।

नागरिक-1 : हम उनके सब षड्यंत्र विफल कर देंगे।

नागरिक-2 : हम उनके मनसूबे मिट्टी में मिला देंगे।

नागरिक-3 : यह राज्य हमारा है, हमारा रहेगा।

नागरिक-4 : यह देश हमारा है, हमारा रहेगा।

नागरिक-1 : हम विदेशियों की दाल नहीं गलने देंगे।

नागरिक-2 : हम विदेशियों की चाल नहीं चलने देंगे।

सामूहिक स्वर : हम आपके साथ हैं। हम आपकी सेना में भर्ती होने को तैयार हैं।

नागरिक-3 : स्वतन्त्रता हमारा नारा है।

नागरिक-4 : और हमारा प्यारा दलवा हमें स्वतन्त्रता दिलायेगा।

नागरिक-1 : फिरंगियों के सामने आत्मसमर्पण करने के स्थान पर हम अपने प्राण देना ज्यादा पसन्द करेंगे।

नागरिक-2 : हां, हम प्राण दे देंगे पर गुलाम नहीं होंगे।

['नहीं होंगे', 'नहीं होंगे' के स्वर उठते हैं। अम्मुकुट्टी आगे बढ़कर उन्हें शान्त करती हुई कहती है।]

अम्मुकुट्टी : नागरिको ! सैनिको ! आपकी यही भावना हमारी शक्ति है। हम उसका आदर करते हैं और आशा करते हैं कि आप सब अपने-अपने नगर के प्रशिक्षण-केन्द्रों में जाकर सेना में भर्ती हो जायेंगे। आपको फल-फूलों से आवेष्ठित इस हरितवसना धरती की, इस धरती की महकती पवित्र मिट्टी की सौगन्ध है कि आप रक्त की अन्तिम बूंद तक इसकी रक्षा करेंगे।

नागरिक : (सामूहिक स्वर) हम अपनी महकती धरती की पवित्र मिट्टी की सौगन्ध खाते हैं कि रक्त की अंतिम बूंद तक इसकी रक्षा करेंगे।

अम्मुकुट्टी : (अल्प विराम) लेकिन नागरिको और सैनिको, जो सौगन्ध आपने खायी है उसकी रक्षा तभी हो सकती है जब आप अनुशासन में रहें। इसलिए आप सब पंक्तिबद्ध होकर मेरे स्वर में स्वर मिलाते हुए आगे बढ़िए।

[तुरन्त लोग पंक्ति बनाने लगते हैं। दोनों मार्गों पर वे दल बनाकर आगे बढ़ते हैं, सबसे आगे अम्मुकुट्टी है।]

उठो आंखें खोलो कि पौ फट गयी है
युगों की अंधेरी निशा कट गयी है।

नया प्राण लेकर हवा आ रही है
नया गान लेकर सबा आ रही है
कली खिल गयी है नया रूप धरकर
नया रंग भरकर किरण छा रही है
अंधेरा हटाते हुए हम चलेंगे
अंधेरे की ताकत बहुत घट गयी है।
उठो आंखें खोलो कि पौ फट गयी है
युगों की अंधेरी निशा कट गयी है।

[सब लोग गात हुए उठान पर से होकर बाहर चले जाते हैं। वेलुत्तम्पी और पद्मनाभन दो क्षण गीत की गूंज से मुग्ध खड़े रहते हैं। फिर वेलुत्तम्पी बोलते हैं।]

वेलुत्तम्पी : अब मुझे विश्वास हो गया है कि हमारी जीत निश्चित है। आओ हम कोल्लम पर आक्रमण की तैयारी करें।

पद्मनाभन : चलो भैया ! कोच्ची से भी मदद आने की आशा है।

वेलुत्तम्पी : कोच्ची से मदद अवश्य आएगी। मुझे अच्चन पर विश्वास है।

[दोनों बातें करते-करते महलवाले द्वार से जाते हैं। अंधकार उतरने लगता है। सैनिकों के दल तलवार-भाले लिए, युद्ध-घोष करते इधर-उधर आते-जाते हैं। पूर्ण अंधकार हो जाने पर भी तलवारों के टकराने की आवाज आती रहती है। जब प्रकाश उभरना शुरू होता है तो बायीं ओर से कर्नल मैकाले और मात्तु तरकन

बातें करते आते हैं। कर्नल मेज के पास रखी कुर्सी पर बैठ जाता है। तरकन सामने खड़ा रहता है। बीच-बीच में अपनी बात पर जोर डालने के लिए दोनों हाथ मेज पर रख आगे झुक आता है।]

मैकाले : टुम कहना चाहटे हो कि महाराज को अभी भी उस बागी वेलुटम्पी की जीट में विश्वास है ?

तरकन : हुजूर ! वह तो कुछ ज्यादा ही सपने देखने लगे हैं। पर मैंने भी बा ान पिल्लै को सावधान कर दिया है। वह महाराज के चारों ओर रहने वाले लोगों को बरगलाने-फुसलाने की पूरी कोशिश कर रहा है।

मैकाले : उसे कहना होगा कि वह सबको बटा डे···क्या बटा डें ?

तरकन : कि वेलुत्तम्पी किसी भी शर्त पर नहीं जीत सकता।

मैकाले : हां, और यह भी कि बगावट को दबाने के लिए फोर्ट सेंट जार्ज की सरकार नयी कुमुक भेज रही है। मलाबार से कर्नल कूपेज पांच रेजोमेंट लेकर चल पड़े हैं। सीलोन से टोपखाना पहुंच चुका है। कर्नल सेंट लीगर एक बड़ी फौज के साथ आरुवामोषी डर्रे से होकर आ रहे हैं। उन्हें ट्रिवेन्ड्रम की ओर बढ़ने का हुक्म है। वह बागी चारों टरफ से घिर चुका है। वह अब बचकर कहीं नहीं जा सकटा।

तरकन : लेकिन हमें कैसे भी हो, उसे जीते जो पकड़कर सरे बाजार सूली पर चढ़ाना है।

मैकाले : वह टो चढ़ाना है। टुम समझटा है···।

तरकन : (रोककर) मैं सब समझता हूं हुजूर। इसीलिए मैंने बालम पिल्लै को उसका पीछा करने को कहा है, और उसकी बचकानी फौज में बगावत फैलाने को भी। और हां, हुजूर, आपको उम्मिणि तम्पी की याद है?

मैकाले : क्यों नहीं। वह टो हमारा पक्का डोस्ट है। उसे हमने बेलु की जगह डीवान बनाने का वायडा किया है ?

तरकन : वही, वही मैं कह रहा था। उसके दीवान बनते ही राज्य हमारे हाथों में होगा।

[तभी एक फिरंगी सैनिक का प्रवेश]

सैनिक : सर, सभी कमाण्डर आ गये हैं। आपको सलाम बोला है।

मैकाले : हम अभी आटा है बोलो।

सैनिक : (सैल्यूट) यस सर।

मैकाले : टो टरकन···टुम अभी ट्रिवेन्ड्रम चले जाओ और कर्नल सेंट लीगर की सहायटा करो। उडयगिरी और पड्मनाभपुरम् के किलों में भी अपने आडमी भेजने हैं।

तरकन : जी हां।

मैकाले : और टम्पी ने कुंडरा में जो एलान किया ठा उसी टरह का एलान हमें भी करना है। और हमारी टरफ से वह टुम्हें करना है। समझा ?

तरकन : जी हुजूर समझा। मैं भी यही कहने वाला था।

मैकाले : ठीक। अब टुम जा सकटा है।

तरकन : जी अच्छा। सलाम।

मैकाले : सलाम।

[दोनों बड़ी गरमजोशी से हाथ मिलाते हैं। उसी स्थिति पर अंधकार उतरता है। पृष्ठभूमि में तोपों का स्वर गूंजता है। जब फिर प्रकाश होने लगता है तो युद्धघोष मिट जाता है। अवसादसूचक संगीत उभरता है। पूर्ण प्रकाश होने पर दायीं ओर से वेलुत्तम्पी, पद्मनाभन और सेना-अध्यक्ष थके-थके मंच पर आते हैं।]

वेलुत्तम्पी : तुम कहना चाहते हो कि कोच्ची का पतन हो गया है ?

सेनाध्यक्ष : जी हां। कर्नल कूपेज ने कोच्ची पर जोरदार हमला किया। उसके सामने पालियत्तच्चन की सब व्यूह रचना ध्वस्त हो गयी। उनके पास तीन हजार सैनिक थे। बहुत बहादुरी से लड़े, लेकिन अन्त में उन्हें अपने से बेहतर सेना से हारना पड़ा। उन्होंने आत्मसमर्पण कर दिया।

वेलुत्तम्पी : (गंभीर होकर) तो आशा का आखिरी दीपक भी बुझ गया। केरल की भाग्यलिपि को बर्बर फिरंगियों ने धूमिल कर दिया। सोचा था हम सब मिल कर उनका मुकाबला करेंगे। कितना भरोसा दिलाया था अच्चन ने ! लेकिन अब (सहसा उग्र होकर) नहीं···नहीं···कुछ भी हो मैं अकेला ही युद्ध करूंगा। अकेला ही फिरंगियों से लोहा लूंगा। (मुड़कर) अच्चन अब कहां है ?

सेनाध्यक्ष : उन्हें मैकाले ने क्षमा कर दिया है। लेकिन तभी

क्षमा किया जब उन्होंने प्रतिज्ञा की कि वे आपकी सहायता नहीं करेंगे। वे अब फिरंगियों की सेना की देख-रेख में रहेंगे। फिरंगी उनकी सम्पत्ति, उनके परिवार और उनकी रक्षा करेंगे।

वेलुत्तम्पी : हुम्म···हार हमारी भी हुई है, पर कोई चिन्ता नहीं। पद्मनाभन ! एक बार फिर कोल्लम पर आक्रमण करना होगा। कल ही।

पद्मनाभन : जैसा आप चाहेंगे वैसा ही होगा पर···

वेलुत्तम्पी : पर···तुम कहना क्या चाहते हो ?(तड़पकर) क्या मैं भी आत्मसमर्पण कर दूं ?···

पद्मनाभन : (तड़पकर) नहीं, नहीं। मैं यह नहीं कहता। नहीं कह सकता। पर मुझे सेनाध्यक्ष ने बताया है। (मुड़कर) तुम्हीं बताओ न।

सेनाध्यक्ष : जी, हमें विश्वस्त सूत्र से मालूम हुआ है कि कर्नल सेंट लीगर एक बड़ी सेना के साथ पहाड़ी रास्ते से राज्य में घुसने की कोशिश कर रहा है।

वेलुत्तम्पी : जानता हूं हम चारों ओर से घिरते जा रहे हैं। एक-एक करके सभी मित्र भी साथ छोड़ गये हैं। पर उसी कारण क्या हमें पीछे हटना होगा ?

पद्मनाभन : पीछे हटने का कोई प्रश्न नहीं है। पर हमें अपनी व्यूह-रचना पर फिर से विचार करना होगा। दक्खिनी मार्ग को असुरक्षित नहीं छोड़ा जा सकता। मद्रास से उनकी और सेना आ रही है। इसके अलावा हमारी सेना पूरी तरह से प्रशिक्षित नहीं है।

[तेजी से अम्मुकुट्टी और धाय मां का प्रवेश]

अम्मुकुट्टी : (सहसा उन्हें देखकर ठिठकती है) क्या बात है ? आप लोग इतने गम्भीर क्यों हैं ?

धाय मां : क्या कोच्ची से कोई बुरी खबर आई है ?

पद्मनाभन : हां मां। पालियत अच्चन ने आत्मसमर्पण कर दिया।

वेलुत्तम्पी : और अब फ्रांसीसियों की ओर से भी कुमुक आने की कोई आशा नहीं दीखती।

धाय मां : इसके लिए तो हम पहले ही तैयार थे। मैंने कहा था न ?

अम्मुकुट्टी : हां, तब आपने कहा था। अब मैं कहती हूं कि वे भले ही न आयें लेकिन हम तैयार हैं, हमारी सेना तैयार है।

पद्मनाभन : लेकिन हमारे सैनिक पूरी तरह से प्रशिक्षित नहीं हैं।

अम्मुकुट्टी : लेकिन गुलामी से बेपनाह नफरत है उन्हें। मर जाएंगे लेकिन पीछे नहीं हटेंगे।

पद्मनाभन : मानता हूं, यह भावना बहुत आवश्यक है। पर साथ ही यह बात भी उतनी ही सच है कि युद्ध में केवल मर-मिटने से जीत निश्चित नहीं हो जाती। हमें मारना भी आना चाहिए।

धाय मां : ठीक कहता है पद्मनाभन। लेकिन अब जो है उसी का सर्वोत्तम उपयोग हमें करना है। हमें एक बार फिर कोल्लम पर पूरी शक्ति से आक्रमण करना होगा।

वेलुत्तम्पी : यही, यही तो मैं सोच रहा हूं।

धाय मां : सोचने का वक्त बीत चुका है वेलु।

वेलुत्तम्पी : जानता हूं। पद्मनाभन, तुम मेरे साथ आओ और सेनाध्यक्ष तुम और अम्मुकुट्टी दक्खिन की ओर जाओ। जो सम्भव हो, वह करो। और मां तुम ?

धाय मां : मेरी चिन्ता मत करो। मैं गांव में ही रहूंगी। वहीं से जो हो सकेगा, करूंगी।

सेनाध्यक्ष : मैं भी जो हो सकेगा, करूंगा, बाकी···

अम्मुकुट्टी : (एकदम) बाकी चिन्ता मत करो। मैं तुम्हारे साथ हूं।

[आगे सेनाध्यक्ष और पीछे अम्मुकुट्टी दोनों बाहर जाने को मुड़ते हैं कि सहसा अम्मुकुट्टी ठिठकती है और वेलुत्तम्पी की ओर देखती है। दोनों की दृष्टि मिलती है और झुक जाती है।]

धाय मां : ठिठक क्यों गये तम्पी ?

वेलुत्तम्पी (चौंककर) नहीं तो, नहीं मां। (हंसता है) आओ, हम चलें। (जाते-जाते) पद्मनाभन, अगर अम्मु न न होती तो···

पद्मनाभन : होती क्यों नहीं ? मनुष्य है तो चेतना भी है। चेतना मनुष्य के होने की शर्त है।

वेलुत्तम्पी : और मां किसके होने की शर्त है ?

पद्मनाभन : ईश्वर के होने की।

वेलुत्तम्पी : (हसकर पद्मनाभन के कंधे थपथपाता है) तभी तो कहता हूं कि हम जीतेंगे। हमें जीतना है। एक और प्रयत्न, एक और आक्रमण, फिर परा-

धीनता की बेड़ियां कट जाएंगी।

[दोनों प्रसन्न मन महल के द्वार की ओर से होकर जाते हैं। मंच पर अब अकेली धाय मां खड़ी है। दो क्षण शून्य में देखती रहती है फिर जैसे अपने से बात करती है।]

धाय मां : जहां आत्मसमर्पण ऐसा सम्पूर्ण हो, जहां संकल्प इतना विराट हो, वहां दुर्दिन की छाया कैसे पड़ सकती है? मां भद्रकाली, अपने बच्चों को मैं तुम्हें सौंपती हूं। जानती हू, दुर्दिन आया भी तो वह नाश के लिए नहीं, नई प्रेरणा देने के लिए ही आयेगा।

[इसी स्थिति पर अन्धकार उतरने लगता है। पूर्ण अन्धकार छा जाता है। दो क्षण बाद जब प्रकाश उभरने लगता है तो नागरिकों और सैनिकों का एक दल मंच पर आता है। अम्मुकुट्टी उनके आगे है।]

अम्मुकुट्टी : उसने कहा था -- एक प्रयत्न और साथियो, फिर पराधीनता की बेड़ियां टूट जाएंगी और हम आजाद हो जाएंगे।

नागरिक-1 : हां, हम आजाद होकर रहेंगे।

नागरिक-2 : हमारा प्यारा दलवा हमें आजादी दिलवाकर रहेगा।

सैनिक-1 : फिरंगियों के आगे घुटने टेकने से मौत कहीं अच्छी है।

सैनिक-2 : हां, आजादी या मौत।

अम्मुकुट्टी : हां दोस्तो, आजादी या मौत। इसलिए आगे

बढ़ो और उन्हें बता दो कि हमारे पास तोपें नहीं हैं, लेकिन आजादी की ललक है। और उसे पाने की अदम्य इच्छा-शक्ति भी। उस इच्छा-शक्ति के सहारे हम समुद्र लांघ सकते हैं। पहाड़ों को पिघला सकते हैं। आकाश से तारे तोड़ ला सकते हैं। लेकिन हम फिरंगियों को तिरुआंतपुरम् के पास नहीं फटकने देंगे। इसलिए आओ, मेरे साथ आओ और इस तरह गाओ कि समुद्र कांप उठे और पहाड़ हिल जाएं।

[वह गाती हुई आगे बढ़ जाती है। नागरिक सैनिक भी गाते हुए पीछे-पीछे जाते हैं।]

समवेत स्वर : बढ़े चलो, बढ़े चलो
चलो नयी मिसाल हो
चलो नयी मशाल हो
बढ़ो नया कमाल हो
बढ़े चलो बढ़े चलो।

[उठान पर होकर बायीं ओर से बाहर जाते हैं। युद्धघोष और तोपों का कर्णभेदी स्वर उठता है। धीरे-धीरे शान्त होता है। प्रकाश उभरने लगता है। उसी के साथ-साथ बायीं ओर से दो गोरे कमाण्डर और अनेक नागरिक मंच पर आते हैं। उनमें तरकन भी है। वह उठान पर जाकर खड़ा हो जाता है और भाषण की मुद्रा में घोषणा-पत्र पढ़ने लगता है।]

तरकन : सुनें, सुनें, सभी नागरिक सुनें। एक जरूरी

ऐलान सुनें। यह ऐलान रेजीडेंट कर्नल मैकाले की ओर से किया जा रहा है। सुनें, सुनें, सभी नागरिक सुनें। त्रिवितांकुर की फौजें भाग रही हैं। हमने उदयगिरी और पद्मनाभपुरम् के किलों पर कब्जा कर लिया है। अब हमारी फौजें तिरुअनंतपुरम् की ओर बढ़ रही हैं। हम यह ऐलान करना चाहते हैं कि जो भी नागरिक कम्पनी बहादुर की फौजों का साथ देंगे उनकी हम हिफाजत करने का वायदा करते हैं। हमारा उद्देश्य बागी दीवान वेलुत्तम्पी और उसके मददगारों को सजा देना है। हम नागरिकों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाना चाहते। हम तो तुम्हारी और तुम्हारे महाराजा की सुरक्षा के लिए लड़ रहे हैं। हमारी लड़ाई बागी दलवा से है। जो उसको हराने या पकड़वाने में हमारी मदद करेगा उसे कम्पनी बहादुर उचित इनाम और सम्मान देगी। सुनें, सुनें, सब खासो-आम, औरत, मर्द सब सुनें।

[भीड़ में फुसफुसाहट, फिर उत्तेजना। कुछ नागरिक चिल्ला उठते हैं।]

सामूहिक स्वर : हम आपके साथ हैं। हम आपका साथ देंगे।

कमाण्डर : शाबाश ! टुम हमारा साठ डोगे। हम टुम्हारी और टुम्हारे महाराजा की हिफाजट करेंगे।

सामूहिक स्वर : हमारे महाराज की हर हालत में हिफाजत होनी चाहिए। आपको हमारे राज्य पर कब्जा नहीं करना चाहिए।

कमाण्डर : हां, हां, हम कब्जा नहीं करेंगे। हम बस उनकी

हिफाजट करेंगे। हम बागी डीवान को सजा डेंगे। आपको हमारी मडड करना होगा।

सामूहिक स्वर : हम करेंगे ! हम करेंगे ।

[इस शोर में कुछ नागरिक परेशान होकर एक ओर चले जाते हैं और चुपचाप बातें करने लगते हैं।]

नागरिक-1 : ऐसा विश्वासघात ! यह तो देशद्रोह है। हमें अभी दलवा को सूचना देनी होगी।

नागरिक-2 : और अम्मुकुट्टी को भी।

नागरिक-3 : चलो। यहां से जल्दो चलो।

[वे भीड़ में से रास्ता बनाते हुए बायीं ओर से बाहर चले जाते हैं। फिरंगियों की फौज बायीं ओर से उठान की ओर होकर बाहर जाती हैं। फिर तुरन्त दूसरी दिशा से बहुत से देसी और गोरे सैनिक लड़ते हुए मंच पर आते हैं, और शोर मचाते हुए बायीं ओर भाग जाते हैं। दो सैनिक रह जाते हैं।]

फिरंगी सैनिक : टुम बचकर जा नहीं सकटा। टुमको मरना होगा।

देसी सैनिक : मैं मरूंगा। लेकिन तुम्हारा खून पीकर मरूंगा। ले···

[दोनों की तलवारें टकराती हैं। लेकिन दूसरे ही क्षण वह उछलकर फिरंगी सैनिक पर वार करता है। फिरगी सैनिक चीखता हुआ बाहर भागता है। पीछे-पीछे देसी सैनिक जाता है। कई क्षण तोपों की

आवाज गूंजती है। गूंजती रहती है। दायीं ओर से कई फिरंगी सैनिक भागते हुए और खुशी से चिल्लाते हुए आते हैं। एक सैनिक घोषणा करने लगता है।]

सैनिक : सुनें, सुनें, सब खासो-आम सुनें। नागरकोविल की लड़ाई में भी हमारी जीत हुई। बागी डलवा भाग गया। हमें उसे पकड़ना होगा। आओ हम सब उसका पीछा करें। हम भेड़िये हैं। हम उसका खून पियेंगे। हा, हा, हा···

[हंसते, शोर मचाते हुए बाहर जाते हैं। मंच पर अंधकार छा जाता है। दो क्षण बाद जब प्रकाश फिर उभरता है तो दायीं ओर थके-हांफते वेलुत्तम्पी वहां आते हैं। दो क्षण शून्य में ताकते रहते हैं। फिर कोच पर बैठ जाते हैं। दोनों हाथों में सिर थाम लेते हैं। संगीत उभरता है। दो क्षण बाद उधर से ही अम्मुकुट्टी आती है, वैसी ही उदास, खोयी-खोयी। एक क्षण दलवा को देखती है, फिर पास आकर बोलती है।]

अम्मुकुट्टी : आप यहां बैठे हैं ! मैं खोजते-खोजते थक गई।

वेलुत्तम्पी : अब यह खोज किसलिए अम्मु ? (अल्प विराम) कैसे-कैसे सपने देखे थे मैंने !

अम्मुकुट्टी : सपने देखना आदमी का स्वभाव है और अधिकार भी। उन्हीं के सहारे वह आगे बढ़ने की योजनाएं बनाता है···

वेलुत्तम्पी : लेकिन मेरे आगे बढ़ने से तो सभी रास्ते बन्द हो

गये अब। नागरकोविल की लड़ाई में हारने के बाद करने को बस एक ही काम बचा है मेरे लिए। सब कुछ समाप्त हो इससे पहले मुझे वह काम पूरा करना है।

अम्मुकुट्टी : (घबराकर) क्य। काम है वह ?

वेलुत्तम्पी : डरो नहीं, अम्मु, वह बात नहीं है जो तुम सोच रही हो। (अल्प विराम) मुझे अभी अपने महाराज और अपने राज्य की रक्षा करनी है।

अम्मुकुट्टी : अब तक क्या कुछ और कर रहे थे ?

वेलुत्तम्पी : करना तो वही चाहा था पर कर नहीं सका। लेकिन एक रास्ता अभी बचा है।

अम्मुकुट्टी : (चकित) कौन-सा रास्ता ?

वेलुत्तम्पी : महाराज के पास जाकर कहूंगा कि वे मुझे विद्रोही घोषित कर दें।

अम्मुकुट्टी : (कांपकर) यह क्या कह रहे हैं आप ?

वेलुत्तम्पी : ठीक कह रहा हूं। किसी भी कीमत पर राज्य को बचाना ही होगा।

[क्षण-भर के लिए दोनों मौन रहते हैं। संगीत उभरता है। अम्मु के चेहरे पर तेजी से रंग उभरते हैं।]

अम्मुकुट्टी : समझी।

वेलुत्तम्पी : तुम भी नहीं समझोगी तो और कौन समझेगा ?

अम्मुकुट्टी : प्रशंसा के लिए कृतज्ञ हूं। पर आप महाराज तक पहुंचेंगे कैसे ? आपकी तलाश में चप्पे-चप्पे पर सैनिक तैनात हैं। नागरिक इधर-उधर घूम रहे हैं। आप अपने को छिपा सकेंगे ?

वेलुत्तम्पी : यह देखना तुम्हारा काम है। मुझे तो बस वहां पहुंचना है।

अम्मुकुट्टी : मुझ पर इतना विश्वास है ?

वेलुत्तम्पी : कब तक ऐसे सवाल पूछती रहोगी तुम ?

[एक क्षण दोनों एक-दूसरे को देखते हैं। तभी पद्मनाभन वहां आता है।]

वेलुत्तम्पी : (उसकी ओर मुड़कर) कुछ आशा है पद्मनाभ ?

पद्मनाभन : है, पर खतरा भी।

वेलुत्तम्पी : (हंसकर) यह तुम कौन-सी नयी बात कह रहे हो ? खतरा है तो खतरे से खेलने वाले भी हैं।

पद्मनाभन : अम्मु, तुम्हें भैया के साथ जाना होगा।

अम्मुकुट्टी : मैं जाऊंगी। तुम न भी कहोगे तब भी जाऊंगी।

पद्मनाभन : तो आओ भैया, आओ अम्मु, मैं आपको अपनी योजना बता दूं। बड़ी सावधानी से आगे बढ़ना होगा। फिरंगियों की सेना बरसाती नदी की तरह तिरुअनंतपुरम् की ओर बढ़ती आ रही है। रास्ते में पड़ने वाले गांवों को लूट रही है। खेतों, बाग-बगीचों को नष्ट कर रही है। हमें उनसे पहले तिरुअनंतपुरम् पहुंचना है। अम्मु उन्हें रोकेगी।

वेलुत्तम्पी : लेकिन रोक सकेगी ?

अम्मुकुट्टी : वह मुझ पर छोड़ दो। मेरे विश्वासपात्र आदमी उनकी खबर रख रहे हैं। फिरंगियों के गुप्त-चरों को गुमराह करेंगे।

पद्मनाभन : जैसे भी हो तुम्हें उन्हें रोकना होगा और भैया वेश बदलकर राजमहल की ओर जाएंगे। आइए।

[तीनों उठान पर आकर दायीं ओर से बाहर चले जाते हैं। उनके बाहर जाते ही बहुत-से सैनिक एक फिरंगी कमाण्डर के साथ आते हैं और चारों ओर तलाश करते हैं।]

सैनिक-1 : यहां तो कोई नहीं है। तुम कहते थे···

नागरिक : हां, मैं कहता था, वह कुछ देर पहले आया था अकेला।

कमाण्डर : अकेला। वह औरट जो टुम लोगों को हमारे खिलाफ भडकाटी ठी, क्या वह उसके साथ नहीं ठी ?

नागरिक : वह अब उसके साथ नहीं है। दक्खिन की तरफ गयी है।

कमाण्डर : लेकिन वह बागी डलवा कहां गया ? कहीं वह भी टो डक्खिन की ओर नहीं चला गया ?

नागरिक : हो सकता है वह कन्याकुमारी से होकर मद्रास की ओर भागना चाहता हो।

कमाण्डर : टो टुम इधर क्या करटा है ? उढर जाकर ढूंढो। महाराजा से मिलने टो हमारी सेना जा रही है। टुम इन सिपाहियों को ले जाओ।

नागरिक : आइए आप लोग।

[वह मुस्कराता हुआ उसी रास्ते से लौटता है। सैनिक उसके पीछे हैं। कमाण्डर बायीं ओर बाहर जाता है। अंधकार के साथ-साथ पूरा पर्दा गिर जाता है।]

अंक 3

[पर्दा उठने पर मंच पर धीरे-धीरे प्रकाश उभरता है। महल के द्वार के पास एक राजसी सिंहासन पर महाराज विचारमग्न बैठे हैं। दो क्षण बाद एक प्रहरी वहां आता है और उन्हें झुककर प्रणाम करता है।]

प्रहरी : महाराज की जय हो ! दीवान वेलुत्तम्पी महाराज के दर्शन करना चाहते हैं।

महाराज : (चौंककर) वेलुत्तम्पी इस समय, यहां ? उन्हें तुरन्त आने को कहो।

प्रहरी : जो आज्ञा।

[जाता है। दो क्षण बाद वेलुत्तम्पी वहां आते हैं। महाराज एक क्षण रुकते हैं। फिर उसकी ओर लपकते है। वेलुत्तम्पी प्रणाम की मुद्रा में झुकते हैं, पर महाराज उन्हें आलिंगन में बांध लेते हैं।]

महाराज : कहां रहे तुम इतने दिन ? क्या समाचार है ?

वेलुत्तम्पी : महाराज क्षमा करें, बहुत बुरी खबर लाया हूं।

महाराज : (परेशान) क्या हुआ ?

वेलुत्तम्पी : कोल्लम के बाद उदयगिरि और पद्मनाभपुरम्

में भी हमारी पराजय हुई। नागरकोविल भ हमारे हाथ से निकल गया। फिरंगियों की सेना समुद्री तूफान की तरह तिरुअनंतपुरम् की ओर बढ़ रही है।

महाराज : ओह ! (एक क्षण चौंकते हैं, फिर परेशान होकर आसन पर बैठ जाते हैं।) यह कैसा दुखद अन्त है !

वेलुत्तम्पी : यह अन्त निश्चय ही है। पर तिरुविंताकुर राज्य का नहीं, मेरा है। मैं राज्य पर आंच नहीं आने दूंगा।

महाराज : (बेहद परेशान) क्या मतलब ?

वेलुत्तम्पी : (एक पत्र देता है) यह पत्र पढ़िए महाराज।

[महाराज यंत्रवत् पत्र लेकर खोलते हैं, पढ़ते हैं। और दूसरे ही क्षण चौंककर वेलुत्तम्पी की ओर देखते हैं।]

वेलुत्तम्पी : पढ़िए महाराज।

महाराज : (पढ़ते हुए) मैं वेलुत्तम्पी स्वीकार करता हूं कि मैंने जान-बूझकर महाराज की अनुमति के बिना फिरंगियों के विरुद्ध विद्रोह का झण्डा फहराया है। महाराज को मेरी योजना का पता तक नहीं था···(एकदम) नहीं, नहीं, यह नहीं हो सकता।

वेलुत्तम्पी : यही होगा महाराज। राज्य को बचाना है। आप मुझे विद्रोही घोषित करेंगे और तुरन्त करेंगे। फिरंगियों की सेना किसी भी क्षण यहां पहुंच सकती है।

महाराज : नहीं, नहीं, मुझसे यह नहीं होगा।

वेलुत्तम्पी : महाराज, यह मेरा और आपका प्रश्न नहीं है। पूरे राज्य का प्रश्न है। राज्य को बचाने के लिए आपको साहस बटोरना होगा और मुझे कड़े से कड़ा दण्ड देना होगा।

महाराज : यह दण्ड तुम्हें नहीं त्तम्पी, मुझे मिलेगा।

वेलुत्तम्पी : जानता हूं महाराज।

महाराज : फिर भी···

वेलुत्तम्पी : फिर भी प्रार्थना करता हूं कि मुझे तुरन्त जाने की अनुमति दीजिए। मैं फिरंगियों के हाथ में नहीं पड़ना चाहता। मैं उनके आने से पहले यहां से निकल जाना चाहता हूं।

महाराज : निकल सकोगे ?

वेलुत्तम्पी : (हंसकर) उसकी चिन्ता न करें। एक दिन आप सुन लेंगे कि त्तम्पी ने अपने प्राण आप ले लिये थे, लेकिन फिरंगियों के हाथ नहीं आया था।

महाराज : त्तम्पी, तुम इतने बड़े हो···

वेलुत्तम्पी : यह भावुक होने का समय नहीं है महाराज। मुझे जाने की अनुमति दीजिए। (अल्प विराम) जाने से पहले एक प्रार्थना और करना चाहता हूं।

महाराज : बोलो, मैं कुछ भी करूंगा तुम्हारे लिए।

[वेलुत्तम्पी अपनी तलवार म्यान से निकालकर महाराज के सामने झुकता है।]

वेलुत्तम्पी : महाराज, यह मेरी प्यारी तलवार है। यही मेरी सम्पत्ति है और यही मेरी शक्ति। मैं नहीं चाहता कि यह फिरंगियों के हाथों में पड़कर

अपवित्र हो । इसे आप किलिमानूर के किले में पहुंचा दीजिए । वही यह सुरक्षित रहेगी ।

[महाराज तलवार लेकर आंखों से लगाते हैं ।]

महाराज : और कुछ ?

वेलुत्तम्पी : फिरंगियों के आने पर उनसे सन्धि कर लीजिए । और एक नया दीवान भी नियुक्त कर लीजिए । और मेरे सिर पर एक बड़ा-सा इनाम घोषित कर दीजिए ।

महाराज : ओह, त्तम्पी तुम··· (आंखें बन्द कर लेते हैं ।)

वेलुत्तम्पी : अच्छा महाराज विदा ।

[तेजी से झुकता है और उसी तेजी से दायीं ओर से बाहर चला जाता है । महाराज आंखें खोलकर उसकी ओर देखते हैं । फिर धीरे-धीरे जैसे अपने से कह रहे हों ।]

महाराज : हे पद्मनाभ स्वामी ! मां भद्रकाली क्या होगा अब इस वीर पुरुष का ? ओह !

[सहसा ताली बजाते हैं । और तभी तेजी से सेनाध्यक्ष वहां प्रवेश करता है ।]

सेनाध्यक्ष : बहुत बुरी खबर है महाराज । फिरंगियों ने नगर को घेर लिया है ।

महाराज : यह तो होना ही था । हमारा-उनका क्या मुकाबला हो सकता है ? फिर भी बहादुर नायरों ने उन्हें बता दिया कि आजादी के लिए हम किस सीमा तक जा सकते हैं । वे हमारा सिर काट सकते हैं पर झुका नहीं सकते । हमें आसानी से गुलाम नहीं बनाया जा सकता··· ।

सेनाध्यक्ष : क्षमा करें महाराज, उनका सन्देशा आया है कि यदि राज्य को बचाना है तो नयी सन्धि करनी होगी।

महाराज : ओह ! (अल्प विराम)

सेनाध्यक्ष : क्या सोचने लगे महाराज ?

महाराज : (चौंककर) कुछ नहीं, कुछ भी नहीं···तुम उन्हें सन्देशा भिजवा दो कि हम तैयार हैं। उन्हें यह भी बता दो कि इस विद्रोह के लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं। हमारे दीवान वेलुत्तम्पी ने हमसे बिना पूछे युद्ध छेड़ दिया था। हमारी दृष्टि में वह विद्रोही और विश्वासघाती है। हम उसे पकड़ने का पूरा प्रयत्न करेंगे। हम और हमारी जनता सदा की तरह कम्पनी सरकार की मित्र और विश्वासपात्र है।

सेनाध्यक्ष : (दीर्घ निःश्वास) यही किया जा सकता है आज की परिस्थिति में। लेकिन महाराज, उनका एक और आदेश है।

महाराज : (तीव्र होकर) वे हमें आदेश कब से देने लगे ?

सेनाध्यक्ष : (तड़पकर) अब कुछ भी हो सकता है महाराज।

[महाराज के चेहरे पर अनेक रंग आते और जाते हैं।]

महाराज : (दीर्घ निःश्वास) ठीक है, क्या कहते हैं वे ?

सेनाध्यक्ष : वे चाहते हैं कि आप उम्मिणित्तम्पी को अपना नया दीवान नियुक्त करें।

महाराज : क्या···उम्मिणित्तम्पी को दीवान बनाएं हम ?

सेनाध्यक्ष : विवश हैं हम।

महाराज : (दीर्घ निःश्वास) हां सेनाध्यक्ष, विवश हैं हम।

हमें ये अपमान जनक शर्तें स्वीकार करनी ही होंगी। अच्छा तुम उन्हें सन्देशा भेजकर उम्मिणित्तम्पी को मेरे पास भेज दो। हमें सन्धि की शर्तों पर विचार करना है। तुम भी उपस्थित रहोगे और सभी प्रमुख भी।

सेनाध्यक्ष : जो आज्ञा महाराज।

महाराज : अब कैसे हम महाराज, कैसी हमारी आज्ञा? (दीर्घ निःश्वास) अच्छा जाओ। (एकदम) हां, जाते-जाते अंगरक्षक प्रमुख को हमारे पास भेजते जाओ।

सेनाध्यक्ष : जी अच्छा।

महाराज : और···और सेनाध्यक्ष तुम्हें पता है वेलुत्तम्पी कहां होगा इस समय?

सेनाध्यक्ष : इतना ही पता लगा है कि वह अपने कुछ विश्वास पात्र साथियो के साथ पश्चिम की ओर जाते देखे गये थे।

महाराज : ठीक है, जाओ। (प्राणहीन-से सिंहासन पर बठ जाते हैं। दोनों हाथों में सिर थाम लेते हैं और फुसफुसाते हैं।) वेलुत्तम्पी का अब क्या होगा? क्या होगा देश पर प्राण न्योछावर करने वाले वीर पुरुष का? मां भद्रकाली!

[यह फुसफुसाहट तीव्र होकर चारों और गूंज उठती है। दो क्षण बाद अंगरक्षक प्रमुख पास आते हैं।]

गोपालन : महाराज ने मुझे याद किया?

महाराज : गोपालन तुम हमारे विश्वासपात्र बन्धु हो।

गोपालन : महाराज का मुझ पर विश्वास है यह मेरे लिए

गौरव की बात है।

महाराज : हम तुम्हें एक काम सौंपना चाहते हैं।

गोपालन : मैं प्राण देकर भी आपके विश्वास की रक्षा करूंगा।

[महाराज वेलुत्तम्पी की तलवार उसकी ओर बढ़ाते हैं।]

महाराज : यह वेलुत्तम्पी की तलवार है। इसे किलिमानूर के किले में पहुंचाना है और इसकी सुरक्षा का पूरा प्रबन्ध करना है। यह प्रतीक है हमारी स्वतन्त्रता की अदम्य आकांक्षा का।

[गोपालन तलवार लेकर उसे चूमते हैं।]

गोपालन : जानता हूं महाराज। आपकी आज्ञा का पालन होगा।

[तेजी से उठते हैं और महाराज को प्रणाम करके उसी तेजी से बायीं ओर चले जाते हैं। महाराज स्तब्ध-से उसी ओर देखते रह जाते हैं।]

महाराज : यह कैसा अन्त हुआ हमारे स्वाधीनता संग्राम का? जिसने राज्य के स्वाभिमान के लिए प्राणों का मोह नहीं किया, उसे मृत्युदण्ड देना होगा। हे वद्मनाम स्वामी! हे प्रभु···

[दोनों हाथों में सिर थाम लेते हैं और अंधेरा एकदम उतरकर अपने दामन में सब कुछ को छिपा लेता है। पृष्ठभूमि में विषाद-भरा संगीत उभरता है। फिर धीरे-धीरे प्रकाश उभरने लगता है। पूरा प्रकाश होने पर उठान पर दरबार लगा

है। सिंहासन पर महाराज विराजमान हैं। आस-पास के आसनों पर दीवान उम्मिणित्तम्पी, सेनाध्यक्ष, अंगरक्षक प्रमुख, कर्नल सेंट लीगर और कर्नल चामर्स बैठे हैं।]

कर्नल सेंट लीगर : हमें बहुत खुशी है कि आपने हमारी सब शर्तें मान ली हैं। आपकी और आपके राज्य की रक्षा का भार अब हम पर है पर, अब फिर कोई विद्रोह करने का साहस न कर सके इसलिए हम आहटे हैं कि जैसे भी तो वेलुटम्पी को गिरफ्टार किया जाए और फांसी पर लटका डिया जाए। हमारी फौजें उसकी टलाश कर रही हैं। पर रेजीडेण्ट का आदेश है कि महाराज उसके मृत्युदण्ड की घोषणा करें।

[महाराज के चेहरे पर एक के बाद एक रंग आते और जाते हैं। दो क्षण वह बोल नहीं पाते।]

सेंट लीगर : मैंने कुछ कहा है महाराज।

महाराज : (एकदम) मैंने सुन लिया है। और वेलुत्तम्पी को मृत्यु-दण्ड देने के आदेश पर हस्ताक्षर भी कर दिए हैं। सेनाध्यक्ष, तुम चारों ओर अपने सैनिक भेज दो। गांव-गांव, घर-घर में उसको ढूंढो। और यह घोषणा भी करवा दो कि जो व्यक्ति जिन्दा या मृत वेलुत्तम्पी को पकड़वाने में मदद करेगा उसे पांच हजार रुपये इनाम दिये जाएंगे।

उम्मिणित्तम्पी : जो आज्ञा महाराज, ऐसा ही होगा। और महाराज, मैंने आपकी अनुमति मानकर उसकी सम्पत्ति की जब्ती के आदेश निकाल दिये हैं।

सेंट लीगर : ओह, वैलडन। यही करना चाहिए ठा।

उम्मिणित्तम्पी : और मैंने हाथियों को भेजकर उसके विशाल भवन को भी नष्ट-भ्रष्ट करवा दिया। (**महाराज एकदम चौंककर दीवान की ओर देखते हैं। वह उपेक्षा से बोलता जाता है।**) और उसके रिश्तेदारों, दोस्तों और उससे सहानुभूति रखने वाले सभी को पकड़कर जेल में बन्द करवा दिया है। बाद में उन्हें किसी निर्जन टापू पर निर्वासित कर दिया जाएगा।

सेंट लीगर : शाबाश ! टुम बहुट डूरअन्डेश हो (**महाराज की ओर**) महाराज हमें यकीन है कि डीवान उम्मिणिटम्पी के रहटे अब कोई विड्रोह करने का साहस नहीं कर पाएगा। अगर किसी ने किया टो हम आपको विश्वास डिलाटे हैं कि उसे डबाने में आपकी पूरी मडड करेंगे। हम हर टरह से आपकी और आपके राज्य की रक्षा करेंगे।

महाराज : (**व्यंग्य से मुस्कराकर**) मुझे आप पर विश्वास है।

सेंट लीगर : टो···अब सन्धि पर हस्टाक्षर करें हम लोग।

महाराज : सन्धि पर हस्ताक्षर तो कर्नल मैकाले को करने होंगे तभी हम करेंगे।

सेंट लीगर : (हंसकर) ओह, वैल, वैल, जैसा आप चाहें। कर्नल मैकाले से कह डेंगे। (**अल्प विराम, कोई नहीं बोलता। कर्नल ही बोलता है**) टो हम चलें

महाराज, आप घोषणा करवा दीजिए।

उम्मिणित्तम्पी : उसका प्रबन्ध मैं अभी करता हूं। (**सेनाध्यक्ष से**) सेनाध्यक्ष, आप सेना की कुछ टुकड़ियां अभी भेज दीजिए।

सेनाध्यक्ष : महाराज के आदेश का पालन होगा।

सेंट लीगर : टो हम चलटे हैं।

[दोनों कर्नल महाराज को प्रणाम करके बायीं ओर चले जाते हैं। दीवान भी पीछे-पीछे जाते हैं।]

उम्मिणित्तम्पी : कर्नल साहब को विदा करके अभी आता हूं महाराज।

[उनके जाने के बाद दो क्षण महाराज स्तब्ध-से देखते रहते हैं। फिर बोलते हैं।]

महाराज : जो नहीं चाहता, वही कर रहा हूं। और फिर भी महाराज हूं। एक राज्य का स्वामी। (**व्यंग्य से हंसकर**)

सेनाध्यक्ष : उस राज्य की सुरक्षा के लिए ही आप यह सब कर रहे हैं।

महाराज : लेकिन मैं पूछता हूं कि हम स्वामी हैं या बन्दी?

सेनाध्यक्ष : मैं स्वयं नहीं जानता मैं क्या हूं पर मुझे आपके आदेश का पालन करना है और जिसके आदेश का पालन किया जाता है वह स्वामी होता है।

[वह जाता है और महाराज जोर से पागल जैसे हंसने लगते हैं।]

महाराज : हम स्वामी हैं हा···हा···हा···स्वामी हा··· हा···

[वह हंसी तीव्रतर होती हुई वातावरण में

गूंजती है। अंगरक्षक प्रमुख घबराकर महाराज को संभालते हैं।]

गोपालन : महाराज, महाराज, अपने को संभालिए (पुकारकर) अरे कोई है ! (**तभी उम्मिणित्तम्पी वहां आते हैं।**) दीवान साहब ! महाराज की तबियत अचानक खराब हो गयी है, तुरन्त वैद्य को बुलवाइये। मैं इन्हें महल में ले जाता हूं।

[अन्दर से दो सेवक आते हैं उनकी सहायता से अंगरक्षक प्रमुख उन्हें अन्दर ले जाते हैं। उम्मिणित्तम्पी मुस्कराते हैं।]

उम्मिणित्तम्पी : मैं समझता हूं इस बीमारी को। लेकिन अब कोई भी मेरे चंगुल से बचकर नहीं जा सकता।

[तेजी से बायीं ओर जाता है और मंच पर अंधकार उतरने लगता है। दो क्षण पूर्ण अंधकार के बाद प्रकाश उभरने लगता है। दायीं ओर से डोंडी पीटने वाला उद्घोषणा करता हुआ मंच पर आता है।]

उद्घोषक : सुनें, सुनें, सब नागरिक स्त्री-पुरुष सब सुनें। हमारे राज्य के परम शत्रु और बागी वेलुत्तम्पी को महाराज मृत्यु-दण्ड की सजा दे चुके हैं पर वह दुष्ट कहीं छिप गया है। जो व्यक्ति उसे जिन्दा या मुर्दा पकड़वाने में मदद करेगा महाराज उसे पांच हजार रुपये इनाम देंगे। और जो व्यक्ति उसे अपने घर छिपाकर रखेगा या और किसी तरह उसकी मदद करेगा उसे मृत्यु-दण्ड तक दिया जा सकेगा। सुनें, सुनें, सब

खासो-आम, नर-नारी सब सुनें। जो भी वेलुत्तम्पी का पता देगा···

[बोलते-बोलते बायीं ओर से बाहर जाता है। तब तक कई मछुआरे वहां आ गये हैं। सब त्रस्त और दुखी हैं।]

पुरुष-1 : आजादी की लड़ाई का यह कैसा अन्त ?

पुरुष-2 : अब तो फिरंगियों की जकड़ और तीव्र हो गयी है।

स्त्री-1 : एक तरह से गुलाम हो गये हैं हम।

स्त्री-2 : मुझे तो हमारे प्यारे दलवा वेलुत्तम्पी की चिन्ता है। न जाने कहां मारे-मारे फिर रहे होंगे वे ?

स्त्री-1 : और तुम्हें चारिणी की याद नहीं है ? कैसी ओजस्विनी वाणी थी उसकी।

स्त्री-2 : वह तो जैसे दलवा की चेतना ही थी। सुना कि वह वेलुत्तम्पी से शादी करना चाहती थी।

पुरुष-1 : लेकिन आजादी के दीवानों के पास शादी करने की फ़ुर्सत कहां होती है ?

पुरुष-2 : कितनी कोशिश की उसने, पर अब सब ऐसा लगता है जैसे कोई सपना देखा हो।

[इसी समय अचानक पन्द्रह-बीस सैनिक बालनपिल्लै के नेतृत्व में तेजी से वहां आते है।]

बालनपिल्लै : तुम कौन हो और यहां क्या कर रहे हो ? क्या तुमने वेलुत्तम्पी को इधर से जाते देखा है ?

पुरुष-1 : हम इसी गांव के रहने वाले मछुआरे हैं। मछलियां पकड़ते हैं···

पुरुष-2 : वेलुत्तम्पी को देखे बहुत दिन बीत गये हमें।

पुरुष एक : हम नहीं जानते वह कहां हैं।

बालनपिल्लै : नहीं जानते तो अब जान जाओगे। सैनिको, गांव में जाकर हर घर की तलाशी लो। मछलियों के जाल में जरूर देखना। (**नारियों से**) तुम में से कोई अम्मुकुट्टी तो नहीं है ?

स्त्री-1 : कौन अम्मुकुट्टी ? हमारे गांव में अम्मुकुट्टी नाम की एक दो वर्ष की बच्ची तो है।

बालनपिल्लै : बकवास बन्द करो। मैं उस अम्मुकुट्टी की बात कर रहा हूं जो गा-गाकर बगावत के लिए भड़काया करती थी।

स्त्री-2 : उसे हमने बहुत दिन से नहीं देखा। हम में से कोई अम्मुकुट्टी नहीं है। मेरा नाम एलियाम्मा है और इसका साराम्मा। हम दोनों ईसाई हैं।

बालनपिल्लै : इनके घरों की तलाशी भी लो। आजकल किसी का भरोसा नहीं। ईसाई हो, हिन्दू हो या मुसलमान हो, नायर हो या मछुआरा हो। पता नहीं कहां जाकर छुप गया है वेलुत्तम्पी ? पर मैं उसे छोड़ने वाला नहीं हूं। पांच हजार रुपये मुझे ही मिलेंगे। जरूर मिलेंगे। क्योंकि मैं वेलुत्तम्पी को खोजकर ही रहूंगा। चलो···चलो···

[सैनिकों को जानवरों की तरह हांकते हुए ले जाता है। पीछे-पीछे एक और उद्घोषक आता है।]

उद्घोषक-2 : सुनें, सुनें हर खासो-आम, हर औरत-मर्द, सब छोटे-बड़े सबको इत्तिला दी जाती है कि मशहूर बागी वेलुत्तम्पी को जिन्दा या मुर्दा पकड़ने या पकड़वाने में जो भी मदद करेगा उसे महाराज

पांच हजार रुपये नकद इनाम देंगे। सुनें, सुनें, सब औरत-मर्द, खासो-आम सब सुनें।

[दमामे पर चोट करता हुआ दूसरी ओर चला जाता है। पीछे-पीछे अम्मुकुट्टी एक मछुआरिन के वेश में मंच पर आती है। चारों ओर देखती है। और फिर धीरे-धीरे फुसफुसाती है।]

अम्मुकुट्टी तो महाराज ने घोषणा कर दी है। यह बात उन्हें बतानी होगी। पर वे हैं कहां? कहां खोजूं? कैसे खोजूं? इतना ही जान पाई हूं कि वे पूर्व की ओर गये हैं।

[तभी बालनपिल्लै मंच पर आता है और अम्मुकुट्टी को गौर से देखता है।]

बालनपिल्लै : ए, तुम कौन हो?

अम्मुकुट्टी : (गिड़गिड़ाकर) मैं तो मछुआरिन हूं हुजूर।

बालनपिल्लै : यहां क्या करने आयी है?

अम्मुकुट्टी : (रुआंसी होकर) हुजूर मेरा छोटा बच्चा बहुत बीमार है। इस गांव में एक बहुत अच्छे वैद्य हैं। उनसे दवा लेने जा रही हूं।

बालनपिल्लै : तुमने अम्मुकुट्टी नाम की किसी गाने वाली औरत को देखा है? वही जो लोगों को भड़काया करती थी।

अम्मुकुट्टी : हुजूर मेरी छोटी-सी बेटी का नाम अम्मुकुट्टी है, पर वह तो अभी बोल भी नहीं सकती। बस रोती रहती है। कल से कुछ ज्यादा ही रो रही है।

बालनपिल्लै : ओह, रोना, रोना, भागो यहां से।

[दायीं ओर से बाहर जाता है। अम्मु-कुट्टी ठिठकती है।]

अम्मुकुट्टी : ठीक जा रहा है। मुझे अब तेजी से उत्तर से पूर्व के पहाड़ी गांव की ओर जाना चाहिए।

[जाती है। तभी एक और सैनिक दल तेजी से दायीं ओर से आकर उठान पर बायीं तरफ जाता है।]

सैनिक-1 : इधर से··· इधर से···हमें पता लगा है कि वेलु-त्तम्पी मद्रास जाने के लिए इधर से ही रवाना हुआ है।

सैनिक-2 : किसने बताया ?

सैनिक-1 : एक मछुआरिन ने। उसके बच्चे को त्तम्पी ने बहुत प्यार किया है।

सैनिक-2 : (हंसकर) और प्यार करते-करते अपने छिपने का स्थान बता दिया।

[वे बायीं ओर चले जाते हैं। अंधकार उतरकर सब कुछ को ग्रस लेता है। दो क्षण बाद जब प्रकाश उतरता है तो बायीं ओर मंच पर एक पत्थर की शिला पर वेलुत्तम्पी बैठे हैं। फटे वस्त्र, थकी हुई देह और गहरी उदास आंखें। कुछ क्षण बाद पीछे से धीरे-धीरे मछुआरिन के वेश में अम्मुकुट्टी वहां आती है और ठिठक जाती है।]

अम्मुकुट्टी : हां, यही तो हैं। (सहसा सामने आती है। दलवा चौंकते हैं।)

वेलुत्तम्पी : कौन, कौन अम्मु ?

अम्मुकुट्टी : हां, अम्मु ! किस रूप में देख रही हूं आज ! क्या यह सत्य है या सपना या यथार्थ ?

वेलुत्तम्पी : इस अवसर पर भी तुम कविता कर लेती हो ?

अम्मुकुट्टी : यह गुण तुमसे ही पाया है मैंने।

वेलुत्तम्पी : कहां से आ रही हो ?

अम्मुकुट्टी : वहां से जहां पांच हजार रुपये पाने के लिए हर सैनिक, हर नागरिक तुम्हें खोज रहा है।

वेलुत्तम्पी : तो महाराज ने मेरी बात मान ली। तिरुवांकुर बच गया।

अम्मुकुट्टी : बच गया, पर किस कीमत पर ?

वेलुत्तम्पी : बचाने के लिए कीमत तो चुकानी ही पड़ती है

अम्मुकुट्टी : पर कितनी ? कैसी ?

वेलुत्तम्पी : जितनी भी अधिक, जितनी भी अच्छी कीमत दोगे उतना ही अच्छा फल मिलेगा। मेरे प्राणों की कीमत पर मेरा देश बचता है तो मुझसे अधिक भाग्यशाली और कौन हो सकता है अम्मू ? बताओ तो···

अम्मुकुट्ठी : (हंसकर) अब तुम कविता करने लगे। पर मैंने तुम्हें यूं ही नहीं खोजा है। मैं तुम्हें यूं ही नहीं छोड़ दूंगी। मैं तुम्हें यहां से बचाकर ले जा सकती हूं। धाय मां मेरे साथ हैं। यह मार्ग उनका जाना-पहचाना है।

वेलुत्तम्पी : अम्मु, यहां बैठो मेरे पास, अंतिम बार। मैं आज तुमसे अंतिम बार बात कर लेना चाहता हूं। मैं हठी और गुस्ताख हो सकता हूं पर लक्ष्य-भ्रष्ट नहीं हो सकता। मैंने वतन की आजादी के लिए

युद्ध छेड़ा था। जीत और हार दोनों में से एक परिणाम हो सकता था उसका और हुआ। अंग्रेजो की तोपों के सामने हमारे भाले कुछ न कर सके। पर अदम्य इच्छा-शक्ति और उद्देश्य के लिए आदमी की मर मिटने की चाह को तो प्रमाणित कर ही दिया हमने।

अम्मुकुट्टी : तभी तो कहती हूं तुम्हारी जरूरत है मुझे और मेरे वतन को। हम फिर युद्ध करेंगे।

वेलुत्तम्पी : करेंगे अम्मु। पर अभी नहीं। अभी तो हमारे वतन पर राहु की काली छाया फैलती जा रही है। विश्वासघातियों की जाति पनप रही है। अब केवल तीन विकल्प शेष हैं मेरे सामने। फिरंगियों के सामने आत्मसमर्पण कर दूं, या कहीं विदेश में जाकर शरण लूं, या सदा के लिए यह संसार छोड़ दूं।

अम्मुकुट्टी : मैं न तुम्हें फिरंगियों के सामने आत्म समर्पण करने दूंगी, न यह संसार छोड़ने दूंगी। मैं तुम्हें विदेश ले जाऊंगी।

वेलुत्तम्पी : लेकिन मैं नहीं जाना चाहता। अगर लड़ना ही है तो यहीं रहकर लड़ना चाहता हूं। सेना इकट्ठी करना चाहता हूं। बस थोड़े दिन कहीं छिपा रहना ठीक होगा। तुम भी छिपकर मेरा काम करती रहो पहले की तरह।

अम्मुकुट्टी : पर राज्य की और फिरंगियों की सारी सेना तुम्हारी तलाश कर रही है।

वेलुत्तम्पी : (हंसकर) विश्वास रखो, वह मुझे कभी जीवित नहीं पकड़ सकेगी। (**किसी के पैरों की पदचाप**

उभरती है।) पद्मनाभ आ रहा है। रात भी उतरने लगी है। हमें यहां से जाना होगा।

[पद्मनाभन पास आकर अम्मुकुट्टी को देखता है।]

पद्मनाभन : अम्मु ! तुम यहां ?

वेलुत्तम्पी : हमें खोजती आ रही है। कहीं विदेश ले जाना चाहती है। पर मैं कैसे छोड़ूं अपनी मां को ? तुम कहो क्या हुआ ?

पद्मनाभन : मेरा विश्वास है कि हम मण्णटि भद्रकाली क्षेत्र में शरण ले सकते हैं। वहां हमें खोजने की बात किसी को नहीं सूझेगी, पर हमें अभी चलना होगा।

वेलुत्तम्पी : चल ही तो रहे हैं हम तब से। चरैवेति-चरैवेति, चलना है बस चलना है। चलो (**जाने को मुड़ते हैं**) तुम कहां जाओगी अम्मु ?

अम्मुकुट्टी : मेरी चिन्ता क्यों हुई तुम्हें ? मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊंगी। मां भद्रकाली ने चाहा तो फिर किसी दिन मिलेंगे हम। तब तक चिरदिन के मेरे साथी विदा, विदा मेरे प्रिय···

वेलुत्तम्पी : हम अलग कहां हैं जो तुम विदा मांग रही हो ? एक दिन मैंने कहा था न कि तुम मेरी चेतना हो और चेतना शरीर से अलग कहां होती है ? आज वह प्रमाणित हो गया। जाओ मेरा काम करती रहो।

[तेजी से जाते हैं। अम्मुकुट्टी उन्हें जाते देखती रहती है। फिर स्वतः ही उसके हाथ जुड़ जाते हैं, आंखें मुंद जाती हैं और

उनसे दो बूंद आंसू टपक पड़ते हैं।]

अम्मुकुट्टी : (स्वगत) मेरा काम हो या तुम्हारा। है तो वह एक ही। अच्छा मेरे आराध्य ! तुमने मुझे राह दिखाई है। तुम मेरे गुरु हो। तुम्हारी आज्ञा मेरे लिए जीवन का मंत्र है। केवल तुम ही मेरे जीवन में आये थे, केवल तुम हो वहां रहोगे।

[बायीं ओर से जाती है। उन सबके जाने के दो क्षण बाद सेना की एक टुकड़ी दनदनाती हुई आती है। इधर-उधर खोजती है।]

सैनिक-1 : यहां तो कोई नहीं है। उस किसान ने कहा था कि उसने एक पुरुष और एक स्त्री को यहां रहस्यमय ढंग से बात करते देखा था।

सैनिक-2 : ऐसा लगता है कि यहां भूत-प्रेतों का वासा है। उसने उन्हीं को देखा होगा। हमें देखकर वे कहीं छिप गये हैं। (उबासी) मुझे तो नींद आ रही है। दिन-रात भागना-भागना। यह भी कोई···

[तभी सहसा वहां किसी भारी चीज के गिरने की आवाज आती है।]

सैनिक-1 : क्या है यह ? आओ, आओ देखें।

सैनिक2- : नहीं-नहीं, हमें वहां नहीं जाना चाहिए। वहां जरूर भूत है। हमें यहां से भाग चलना चाहिए।

[तेजी से ऊपर चढ़कर बायीं ओर जाते हैं। एक क्षण बाद हंसी की आवाज गूंजती है। और उसी के साथ अंधकार उतरता है। सन्नाटा छा जाता है। कुछ क्षण बाद प्रकाश उभरता है तो महल के द्वार पर

नामपट्ट लगा है—'परयकाव देवी क्षेत्रम् मण्णटि'। दो क्षण प्रकाश उस पर केन्द्रित होता है। फिर बायीं ओर से आते दो थके-मांदे फटे हाल राहगीरों पर पड़ता है। पर थके होने पर भी वे सजग हैं। चारों और सतर्कता से देखते हैं। फिर उनकी दृष्टि नामपट्ट पर जाती है। चेहरे पर हर्ष की रेखाएं उभरती हैं।]

पद्मनाभन : मिल गया। यही है वह देवी क्षेत्रम्। सवेरा होने वाला है। हम ठीक समय पर पहुंचे। (पृष्ठभूमि में मंत्रध्वनि उभरती है। शंखनाद, मजीरे व घंटियों की आवाज) पूजा हो रही है। मठ के अधिष्ठाता को पुकारता हूं।

[आगे बढ़कर द्वार पर दस्तक देता है। बार-बार देता है। अन्दर से आवाज आती है।]

मठाधिकारी : कौन है ?

पद्मनाभन : द्वार खोलिए। दो विशिष्ट अतिथि आए हैं।

[द्वार खुलता है। मठाधिकारी बाहर झांकता है।]

मठाधिकारी : कौन हैं विशिष्ट अतिथि ?

पद्मनाभन : वेलुत्तम्पी दलवा आये हैं महाराज। मैं उनका भाई पद्मनाभन हूं। हम मठ में शरण चाहते हैं।

मठाधिकारी : (एक क्षण दोनों को ध्यान से देखता है) वेलुत्तम्पी दलवा और पद्मनाभन शरण चाहते हैं मठ में ! जानते हो कि महाराज ने तुमको जिन्दा या

मुरदा पकड़ने या पकड़वाने के लिए पांच हजार का इनाम घोषित किया है। तुमने यहां आने का साहस कैसे किया ?

[वेलुतम्पी आगे बढ़ता है।]

वेलुतम्पी : इसलिए किया कि यहां तलाशी लेने का विचार भी फिरंगियों के मन में नहीं आएगा। हम छिपकर यहां रह सकेंगे। हमें कुछ समय मिलेगा राज्य को फिरंगियों की दासता से मुक्त करने के लिए···

मठाधिकारी : और अगर मैं तुमको फिरंगियों के हवाले कर दूं तो···

वेलुतम्पी : आप ऐसा नहीं कर सकते।

मठाधिकारी : क्यों नहीं कर सकता ?

वेलुतम्पी : क्योंकि आप धर्मगुरु हैं और हमारे महाराज पद्मनाभ स्वामी की ओर से ही राज करते हैं।

मठाधिकारी : उन्हीं महाराज ने तो तुम्हारे सिर पर इनाम बोला है···

वेलुतम्पी : वह एक चाल है। मेरे कहने पर ही महाराज ने···

मठाधिकारी : चाल यह भी हो सकती है कि तुम महाराज के कोप से बचने के लिए यहां छिपना चाहते हो। मैं देवी क्षेत्र को इस झमेले में नहीं डालना चाहता। (धीरे-धीरे) चाहूं तो मैं तुम्हें पकड़वा सकता हूं पर मैं ऐसा नहीं करूंगा। तुम यहां से चले जाओ। फिरंगियों की फौज तुम्हारे पीछे है।

पद्मनाभन : पर हम जाएं कहां ?

मठाधिकारी : जहां तुम्हारे सींग समाएं। तुम राजद्रोही हो और यह क्षेत्र राजद्रोहियों को शरण नहीं दे सकता। इसलिए कहता हूं कि इससे पहले कि मेरी नीयत बदल जाए तुम यहां से चले जाओ।

[द्वार बन्द कर लेता है। दोनों भाई थके-हारे दो क्षण एक-दूसरे को देखते हैं। शंख-ध्वनि फिर उभरती है।]

वेलुत्तम्पी : एक के बाद एक सारे द्वार बन्द हो रहे हैं···

पद्मनाभन : होने दो। बार-बार होने वाली वर्षा में भीगी मेरे वतन की लाल मिट्टी हमें अवश्य राह दिखायेगी। (सहसा याद करके) याद आया। एक बार जब इधर आया था तो देखा था पास ही नारियल और केलों के पत्तों की छाया में एक छोटा-सा देवी का मन्दिर है। आओ वहीं चलते हैं।

वेलुत्तम्पी : कहीं भी चलो···क्या फर्क पड़ता है अब !

[दोनों बायीं ओर जाते हैं और दो क्षण बाद दायीं ओर से मंच पर आते हैं। वहां अब एक वीरान मन्दिर का द्वार दिखाई देता है। बहुत छोटा-सा प्रकोष्ठ है, दो व्यक्ति बैठ सकें इतना। दोनों वहां आकर प्रणाम में झुक जाते हैं।]

पद्मनाभन : आखिर मां ! आपने ही शरण दी।

वेलुत्तम्पी : (बैठता हुआ) थोड़ा समय और मिल गया जीने को।

पद्मनाभन : (पूर्ववत्) मां, हमारी रक्षा करना। हम अब आपकी शरण में हैं। (ध्यान में खो जाता है)

वेलुत्तम्पी : (स्वगत) जैसे एक सपना देखा था मैंने, फिरंगियों के बढ़ते शिकंजे से मुक्ति पाने का सपना, पूरी रियासत को चेर साम्राज्य की तरह एक करने का सपना। सब चकनाचूर हो गया। जिस भवन का मैंने निर्माण करना चाहा था उसकी दीवारें उठ ही रही थीं कि भूकम्प आ गया और सब कुछ ढह गया (अल्प विराम, संगीत) पर मैं जानता हूं यह पराजय स्थायी नहीं है। फिरंगियों का राज हमेशा नहीं रहेगा। नये लोग आएंगे और भवन का निर्माण फिर शुरू करेंगे और अन्त में वे फिरंगियों को यहां से भगा देंगे। कोई किसी को हमेशा के लिए गुलाम नहीं बना सकता। आजादी हर आदमी का जन्म-सिद्ध अधिकार है। और वह उस अधिकार को प्राप्त करके रहेगा···।

[पद्मनाभन उठता है।]

पद्मनाभन : आप यहीं ठहरें भइया। मैं आसपास टोह लेता हूं। खाने के लिए कहीं कुछ केले ही मिल जाएं। आह ! नारियल, केले, कटहल और फूलों से भरे अपने इस प्रदेश में हम कितने विपन्न हो गए हैं आज ! भीख मांगने का भी अधिकार नहीं है हमें ···धान की कलम भी सूख गयी है।

[जाता है। वेलुत्तम्पी अधलेटे ध्यानमग्न हो जाते हैं, जैसे 'सो गए हों। संगीत गूंजता रहता है। फिर एकाएक चौंककर उठते हैं।]

वेलुत्तम्पी : मां, मां, यह तुम थीं साक्षात् ! तुमने मुझे दर्शन

दिए। तुमने पूछा है कि क्या मैं अपना रक्त दे सकता हूं ? बिना रक्त-दान के स्वतन्त्रता का स्वर्ण-कमल नहीं खिल सकता। (गम्भीर होकर) जानता हूं मां, मुझे रक्त-दान करना ही होगा, करना ही होगा। मैं करूंगा मां, मैं रक्त-दान करूंगा। (पद्मनाभन हांफता हुआ आता है।) क्या बात है पद्मनाभन ?

पद्मनाभन : वे आ गए भैया। उनकी सेना का एक बड़ा दल देवी क्षेत्र से होकर इधर ही आ रहा है। चारों ओर से घिर गए हैं हम।

वेलुत्तम्पी : (मुस्कराकर) यह अच्छा ही हुआ। तुमने अपने वतन की लाल मिट्टी की बात कही थी। रक्त का रंग भी लाल होता है। अब मैं समझा, मेरे वतन की लाल मिट्टी को लाल रक्त की जरूरत है। मैं उसकी जरूरत पूरी करूंगा। तब कम-से-कम रक्त-दान करने का मेरा सपना तो पूरा हो सकेगा।

पद्मनाभन : लाल मिट्टी···लाल रक्त···रक्त-दान का सपना ? समझा नहीं।

वेलुत्तम्पी : अभी समझ जाओगे। (शोर पास आता है) यह आवाज सुन रहे हो ? वे आ गए हैं और तुम जानते हो कि वे मुझे जीवित नहीं पकड़ सकते···

[शोर बहुत पास आता है, उसके ऊपर से उठती एक तेज आवाज गूंजती है।]

आवाज : वेलुत्तम्पी, हमें मालूम है तुम मन्दिर के भीतर हो। हम नहीं चाहते कि यहां रक्त बहे···

वेलुत्तम्पी : तुम नहीं चाहते लेकिन देवी चाहती है। (मुड़कर)

पद्मनाभ, मेरे भाई, तुम तो सब कुछ जानते हो। मेरी अन्तिम इच्छा पूरी नहीं करोगे क्या ? (कटार निकालकर) इसे मेरे सीने में भोंक दो।

पद्मनाभन : (पागल-सा) नहीं, नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता, भइया, नहीं कर सकता !

[किवाड़ों पर बराबर चोट पड़ रही है और शोर बढ़ रहा है।]

आवाज : अब भी समय है वेलुत्तम्पी, बाहर आ जाओ।

वेलुत्तम्पी : पद्मनाभ, जल्दी करो।

पद्मनाभन : (आंखों पर हाथ रखकर) मैं नहीं कर सकता, नहीं कर सकता।

वेलुत्तम्पी : (तड़पकर) कायर ! तुम नहीं कर सकते···लेकिन मैं कर सकता हूं। मैं जीते-जी दुश्मन के हाथ में नहीं पड़ूंगा, नहीं पड़ूंगा···मां, मुझे आशीर्वाद दो कि मैं फिर इसी देश में जन्म लूं और··· (कहते-कहते कटार सीने में भोंक लेता है। द्वार चरमराता है।)

पद्मनाभन : (पागल-सा) भैया, यह क्या किया तुमने ? (तुरन्त गम्भीर होकर) समझ गया। यह तुम्हारा रक्त-दान है। लेकिन तुम तड़प रहे हो ! मैं तुम्हें तड़पने नहीं दे सकता। मैं तुम्हें इस मर्मान्तक पीड़ा से मुक्त करूंगा। (तलवार से वार करता है) शान्त हो जाओ। (तभी द्वार टूट जाता है। दो सैनिक बन्दूक ताने अन्दर आते हैं) आओ, तुम्हारा ही इन्तजार था। तुम्हारा परम शत्रु तुम्हारे सामने लेटा है, पर तुम उसे पकड़ नहीं सकते। वह तुम्हारी पहुंच से बहुत दूर चले गए हैं।

[त्रासद संगीत उभरता रहता है। सैनिक

पागल-से देखते हैं।]

फिरंगी सैनिक : यह क्या ? वेलुटम्पी ने आट्महट्या कर ली !

फिरंगी कप्तान : आट्महट्या कर ली, वेलुटम्पी ने, हम उसे जीटे जी नहीं पकड़ सके ! (**एकदम**) पर कोई चिन्टा नहीं, हम उसकी लाश को ले जाएंगे। उसको सूली पर टांगेंगे। (**सैनिकों से**) नंगा कर डो इस लाश को और घसीटते हुए ले चलो ट्रिवेन्ड्रम और साट डिन टक कण्णनमूला के बड़े बाजार में सूली पर लटकाए रखो। और इसके बागी भाई को भी गिरफ्टार कर लो और जहां-जहां भी इसके रिश्टेदार और डोस्ट हों उन्हें भी गिरफ्टार करके सूली पर लटका डो। टाकि सब लोग सबक लें।

[सैनिक लाश को घसीटते हुए ले जाते हैं। कुछ पद्मनाभन को खींचते हैं। अंधकार उतरने लगता है। शीघ्र ही सब कुछ को ग्रस लेता है। कुछ क्षण बाद जब फिर प्रकाश उभरता है तो उद्घोषक घोषणा करता हुआ मंच पर प्रवेश करता है।]

उद्घोषक : सुनें, सुनें, सभी नागरिक सुनें, खासो-आम, औरत-मर्द सभी सुनें। खतरनाक बागी वेलुत्तम्पी की लाश हमें मिल गयी है। उस लाश को कण्णनमूला में सूली पर लटकाया जा रहा है। सब नागरिकों, सब खासो-आम को हुक्म दिया जाता है कि वे आकर देखें कि बगावत करने का क्या अंजाम होता है। सुनें, सुनें, सब नागरिक सुनें। वे सब कण्णनमूला आकर उसे देखें और सबक

लें। सुनें, सुनें···

[उद्घोषक घोषणा करता हुआ बाहर जाता है। दूसरी ओर से कुछ नागरिक बड़े सतर्क भाव से मंच पर प्रवेश करते हैं और इधर-उधर खड़े होकर बातें करने लगते हैं।]

नागरिक-1 : कायर कहीं के। लाश को सूली पर लटकाएंगे।

नागरिक-2 : जीते जी हाथ नहीं लगा सके। अब मुर्दे को मारकर वीरता का पदक पाना चाहते हैं।

नागरिक-3 : (दीर्घ निःश्वास) कैसा त्रासद अंत हुआ इस तेजस्वी क्रांतिकारी का !

नागरिक-4 : त्रासद नहीं, शानदार कहो बन्धु ! अपने हाथों से अपना सिर काटकर स्वाधीनता की वेदी पर चढ़ाना त्रासदी नहीं है बल्कि एक ऐसी गौरव-गाथा है जिसे लोग युग-युग तक गायेंगे और फिर अपना सिर ऊंचा कर लेंगे।

नागरिक-5 : और वह गाथा बन जाएगी प्रेरक शक्ति उन आने वाली पीढ़ियों की जो फिरंगियों से लोहा लेंगी।

[तभी अम्मुकुट्टी मंच पर आती है, पागलों की तरह से इशारे करती हुई।]

अम्मुकुट्टी : मैंने तुम्हारी बातें सुन ली हैं। जोर से मत बोलो। अब तो हवा से भी डर लगता है। चुगली खा देगी वह भी किसी से। अभी-अभी उसने किसी से कहा था कि अम्मु ने तो वेलि से प्यार किया था। वेलि के आत्महत्या कर लेने पर वह जिन्दा कैसे है ? पगली हवा इतना भी

नहीं जानती कि अवसान शरीर का होता है, चेतना तो अमर है। (पास आकर) तुमने ठीक समझा है। दलवा ने आत्म-हत्या नहीं की है। स्वाधीनता की बलिवेदी पर रक्त से तर्पण किया है। बिना दिये कुछ मिलता है क्या ? (हंसती है) ये फिरंगी कायर ही नहीं, मूर्ख भी हैं। कहते हैं, दलवा की लाश को सूली पर लटकाएंगे, लेकिन यह लाश दलवा की है कहां ?

नागरिक : (सामूहिक स्वर) लाश दलवा की नहीं है तो फिर किसकी है ?

अम्मुकुट्टी : उनकी अपनी। अपनी लाश को सूली पर लटका कर वे हमें डराना चाहते हैं।

नागरिक : (पूर्ववत्) हम समझे नहीं। (सिर हिलाते हैं)

अम्मुकुट्टी : समझे नहीं ? अजी वे समझते हैं कि दलवा के जाने पर दलवा का अन्त हो गया। यह दलवा का अन्त नहीं है। उनके अपने अन्त का आरम्भ है।

नागरिक : (पूर्ववत्) उनके अपने अन्त का आरम्भ··· (अल्प विराम) ओह···समझे···उनके अपने अन्त का आरम्भ यानी स्वाधीनता की लड़ाई का आरम्भ।

अम्मुकुट्टी : हां, यह स्वाधीनता की लड़ाई का आरम्भ है और हमने इसकी नींव में अपनी सबसे कीमती वस्तु रखी है। और वह कीमती वस्तु है हमारे प्यारे दलवा का रक्त। उसके गौरव की रक्षा होनी चाहिए। और मैं जानती हूं इतिहास उसकी रक्षा करेगा। फिरंगी कुछ दिन हमें परे-

शान कर सकते हैं लेकिन फिर वही होगा जो सदा होता आया है।

नागरिक : (आत्मविभोर) जो सदा होता आया है यानी हमारा प्यारा दलवा हर आने वाले स्वाधीनता सेनानी में जियेगा।

अम्मुकुट्टी : और तब तक जियेगा जब तक इस देश पर से फिरंगियों के शासन का अन्त नहीं हो जाता है। देर-सवेर जुल्म सदा जालिम को ही खाता है। (एकदम सैनिक की तरह सेल्यूट करती हैं) देश की आजादी जिन्दाबाद। हमारी स्वतन्त्रता अमर रहे।

[फिर जैसे विद्रोहियों का नेतृत्व कर रही हो। यन्त्रवत् मार्च करती और गाती हुई उठान पर से होकर चली जाती है।]

बढ़े चलो, बढ़े चलो,
चलो नयी मिसाल हो,
चलो नयी मशाल हो,
चलो नया कमाल हो,
बढ़े चलो, बढ़े चलो।

[एक को छोड़कर सब नागरिक यन्त्रवत् गाते-गाते पीछे-पीछे जाते हैं और एक क्षण बाद बालनपिल्लै के नेतृत्व में देसी सैनिकों का एक दल तेजी से वहां आता है, इधर-उधर देखता है। वहां बस एक नागरिक है।]

बालनपिल्लै : ए, कौन था यहां ? कौन गा रहा था विद्रोह के गीत ?

नागरिक : एक पगली थी हुजूर। वह कुछ गा रही थी। मैं समझ नहीं सका। पगली की बात कोई समझता है क्या ?

बालनपिल्लै : मैं तुम्हारी राय नहीं मांग रहा। बताओ वह पगली किधर गई है। जरूर वह अम्मुकुट्टी होगी।

नागरिक : उधर गयी है। (**बांयी ओर इशारा करता है**) उधर।

बालनपिल्लै : चलो, चलो उसे पकड़ें।

[सब ऊपर होकर बायीं ओर जाते हैं। नागरिक हंसता हुआ दायीं ओर जाता है।]

नागरिक : मूर्ख कहीं के। उसे पकड़ेंगे। किसी की चेतना को भी कोई पकड़ सकता है! फिर भी चलूं, उसे चेता दूं।

[उसके जाने के बाद आवाज उभरती रहती है।]

बढ़े चलो, बढ़े चलो
चलो नयी मिसाल हो
चलो नयी मशाल हो
चलो नया कमाल हो
बढ़े चलो, बढ़े चलो।

[धीरे-धीरे पर्दा गिरने लगता है। उसके गिरते-गिरते गीत की ध्वनि ऐसे गूंजने लगती है जैसे सारे वातावरण में व्याप्त हो गयी हो।]

••

विष्णु प्रभाकर—हिन्दी में नाटक के क्षेत्र में विशिष्ट प्रतिभा सम्पन्न रचनाकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। प्रसिद्ध बंगला उपन्यासकार शरत् चन्द्र के जीवन पर 'आवारा मसीहा' के कृतित्व ने विष्णु जी को भारत के महान जीवनीकार के रूप में भी प्रस्तुत किया है।

विष्णु जी का जन्म 21 जून, 1912 को मुजफ्फरनगर (उ० प्र०) के एक गांव में हुआ। बचपन हिसार (हरियाणा) में गुजरा। वहीं शिक्षा प्राप्त की और सरकारी नौकरी से जिन्दगी की शुरूआत की। कुछ समय पश्चात् नौकरी छोड़ स्वतन्त्र लेखन अपनाया। कुछ दिन आकाशवाणी में अधिकारी के रूप में भी रहे।

प्रमुख रचनाएं

आवारा मसीहा, मैं भी मानव हूं, युगे-युगे क्रांति, संघर्ष के बाद, कुछ रेखायें, तीसरा आदमी, मेरा वतन, हम इनके ऋणी हैं, क्या खोया क्या पाया, आदि।

केरल का क्रांतिकारी विष्णु प्रभाकर

किताब घर